Annual Subscription Fee 100/-

18th September 2015

ओ३म्

आर्य जीवन

ఆర్య జీవన్

संस्कृति संरक्षण व सामाजिक परिवर्तन का संकल्प

హిందీ-తెలుగు ద్విభాషా పక్ష పత్రిక

आर्य प्रतिनिधि सभा आ.प्र.-तेलंगाना हैदराबाद की ओर से

हिमाचल प्रदेश के महामहिम राज्यपाल नियुक्त किए जाने पर

आचार्य देवव्रत जी को बधाई एवं शुभकामनाएँ

गुरुकुल के एक आचार्य का गवर्नर बनना आर्य समाज के लिए गौरव की बात

आर्य जगत आपका हार्दिक अभिनंदन करता है

आचार्य देवव्रत जी स्वामी रामदेव के साथ अभिनन्दन समारोह में

हरयाणा के मुख्य मंत्री श्री मनोहरलाल खट्टरजी आचार्य देवव्रतजी का स्वागत कर

विश्लेषण

प्रभात कुमार रॉय

युद्धग्रस्त देशों के शरणार्थियों में पूर्वी यूरोप के देशों खासकर जर्मनी में बस जाने की प्रवृत्ति अधिक प्रतीत हो रही है। दरअसल, जर्मनी अभी तक अपने दमखम पर आर्थिक मंदी की भयानक मार से बचा रहा है। जबकि अमेरिका के साथ समस्त पश्चिमी यूरोप अभी इसकी गिरफ्त में हैं।

यूरोप में शरणार्थी समस्या

अफगानिस्तान, इराक, सीरिया और यमन में गृहयुद्ध जारी है। पहले अलकायदा और अब इस्लामिक स्टेट की कयादत में धर्मांध जेहादियों के विनाशकारी आक्रमक तेवरों ने इन देशों को बरबाद कर दिया है। अंधाधुंध बमबारी के परिणामस्वरूप लाखों बेगुनाह नागरिक हलाक हो चुके हैं और बहुत विशाल पैमाने पर नागरिक संपदा को ध्वस्त कर दिया गया है। विगत 14 वर्षों में अफगानिस्तान में गृहयुद्ध में तकरीबन दस लाख लोग मारे गए हैं और लाखों की तादाद में देश से पलायन कर गए हैं। सीरिया के गृहयुद्ध में करीबन एक लाख पचास हजार लोग मारे जा चुके हैं और तकरीबन दस लाख नागरिक देश से पलायन करने पर विवश हुए हैं। इराक में विगत 13 वर्षों से जारी युद्ध में लगभग ग्यारह लाख लोग मारे गए हैं और तकरीबन 30 लाख से अधिक लोगों ने देश से पलायन किया है। यमन में अभी तकरीबन पचास हजार लोग मारे जा चुके हैं और तकरीबन 3 लाख वतन छोड़कर पलायन कर चुके हैं।

प्रायः इन सभी देशों में इस्लाम का परचम उठाकर वस्तुतः शिया बनाम सुन्नी धड़ों के मध्य विनाशकारी युद्ध लड़ा जा रहा है। इन सभी गृहयुद्धों में बेबस और बेगुनाह नागरिकों को धर्मांध जेहादी अपना निशाना बनाते रहे हैं। विनाशकारी गृहयुद्ध में सीरिया तो तकरीबन बरबाद ही चुका है और तकरीबन यही हाल इराक का भी हो चुका है। 2002 में अमेरिका ने सद्दाम हुसैन को सत्ता से हटाने के लिए इराक में परमाणु अस्त्रों की मौजूदगी का बहाना लेकर बर्बर आक्रमण किया था। अमेरिकन

फौज पूर्ण रूप से शांति स्थापित किए बिना ही इराक में बहुमत वाले शिया समुदाय के लीडरों को सत्ता सौंप कर स्वदेश वापस लौट गई, किंतु अलकायदा का स्थान लेकर इस्लामिक स्टेट नामक तंजीम द्वारा सुन्नी कट्टरपंथियों को साथ लेकर भयानक गृहयुद्ध प्रारम्भ कर दिया गया। प्रारम्भ में ईरान के शिया शक्ति और प्रभाव को संतुलित करने की गरज से अलकायदा के ओसामा बिन लादेन का अलकायदा फौज की तरह ही इस्लामिक स्टेट के सरगना अल बगदादी की दहशतगर्द फौज को भी अमेरिकन आर्मी द्वारा सऊदी अरब के पेट्रो डॉलर के दमखम से तैयार किया गया था। दुर्भाग्यपूर्ण तौर पर इतिहास ने स्वयं को दोहरा दिया और अल बगदादी की फौज ईरान को छोड़कर अमेरिका परस्त इराक हुकूमत पर आक्रामक होकर टूट पड़ी। जैसे कि ओसामा बिन लादेन रूस को छोड़कर अपने आका अमेरिका पर ही आक्रमक हो गया था। इन विकट हालात में कुर्दिस्तान वर्कर पार्टी द्वारा पृथक कुर्दिस्तान की स्थापना के लिए गुरिल्ला युद्ध प्रारम्भ कर दिया गया, जिसके कारण टर्की को खास निशाना बनाया गया, क्योंकि टर्की ने सदैव ही आजाद और खुदमुख्तार कुर्दिस्तान के निर्माण का पुरजोर विरोध किया है। टर्की की वायुसेना ने सीरिया पर भारी बमबारी की है, ताकि अल नुसरा और अहरर अल शाम के सुन्नी जेहादियों की इमदाद की जा सके, जिनको कि टर्की हुकूमत कथित तौर उदार करार देती रही है क्योंकि ये जेहादी गिरोह आजादी के दिवाने कुर्दों के दुश्मन हैं जो कि इस्लामिक स्टेट की आतंकवादी फौज से कड़ा लोहा ले रहे हैं। अमेरिका के मिलिट्री एलाइंस देश सऊदी अरब की वायुसेना द्वारा यमन पर भारी बमबारी अंजाम दी जा रही है, जिसके कारण यमन तबाही के कगार पर पंहुच गया है।

अमेरिका के साथ मिलिट्री एलाइंस में बाकायदा शामिल रहे इराक में जारी गृहयुद्ध में तबाह-बरबाद और दरबदर होकर नागरिक वस्तुतः लाखों की तादाद में अपने वतन इराक से पलायन करने पर विवश हो गए हैं। सीरिया और यमन से भी लाखों नागरिकों का पलायन निरंतर जारी रहा है। इन तमाम युद्ध ग्रस्त देशों के नागरिक यूरोप को कहीं अधिक सुरक्षित क्षेत्र मानकर उधर की ओर अपना रुख कर रहे हैं। हालांकि टर्की, लेबनान, जॉर्डन आदि मुस्लिम देशों में भी शरणार्थी इराक, यमन और सीरिया से पलायन करके पहुंचे हैं, किंतु युद्धग्रस्त देशों के शरणार्थियों में पूर्वी यूरोप के देशों में बस जाने

की प्रवृत्ति अधिक प्रतीत हो रही है। युद्ध ग्रस्त देशों से पलायन किए नागरिकों के मध्य जर्मनी में शरण लेने की प्रवृत्ति सबसे अधिक बनी रही है, क्योंकि जर्मनी अभी तक अपने दमखम पर आर्थिक मंदी की भयानक मार से बचा रहा है। जबकि 2008 से प्रारम्भ हुई आर्थिक मंदी ने अमेरिका के साथ समस्त पश्चिमी यूरोप को अपनी गिरफ्त में ले लिया था। पश्चिम यूरोप के देश खासतौर पर ब्रिटेन, ग्रीक, स्पेन और इटली आदि तो आर्थिक मंदी की भयानक चपेट में आ गए। यहां तक कि ग्रीक तो दो बार दिवालिया घोषित हो चुका है और स्पेन की आर्थिक स्थिति बुरी तरह चरमरा चुकी है। जर्मनी की अच्छी आर्थिक स्थिति होने के कारण शरणार्थियों को वहां पर रोजगार हासिल हो जाने की संभावना अधिक प्रतीत हो रही है। यही कारण है अधिकतर शरणार्थियों के दिल दिमाग में जर्मनी में बस जाने की प्रबल तमन्ना ने जोर पकड़ा है।

जर्मनी की कुल आबादी में पहले से ही आठ प्रतिशत टर्की से आए मुस्लिम शरणार्थियों की तादाद है। यही कारण है कि जर्मन चांसलर एंजेला मर्केल ने युद्ध ग्रस्त राष्ट्रों से पलायन करके आए शरणार्थियों को अपने राष्ट्र में शरण देने से इंकार कर दिया है और समस्त यूरोप के राष्ट्रों से मिलकर इस मानवीय संकट का सामना करने की अपील की है। युद्धग्रस्त देशों के शरणार्थियों को जर्मनी में पनाह न दिए जाने के निर्णय की पृष्ठभूमि में दो विशिष्ट कारण विद्यमान रहे हैं। प्रथम, एक ऐतिहासिक दौर में जर्मनी का फासिस्ट इतिहास रहा है और धार्मिक नस्लवाद का घरेलू संकट फिर से वहां अपना सर न उठा ले, यह खौफ भी उदारवादी प्रजातांत्रिक जर्मन लीडरों को सदैव सताता रहता है। दूसरा, सिर्फ जर्मनी को ही क्या, यूं तो समस्त यूरोप को ही इस्लामिक स्टेट के बर्बर दहशतगर्दों से खतरा बना हुआ है। सीआईए सहित अनेक इंटरनेशनल खुफिया एजेंसियों ने गंभीर तौर पर चेताया है कि फ्रांस और जर्मनी पर इस्लामिक स्टेट तंजीम के आतंकवादी, वस्तुतः अमेरिका पर अंजाम दिए गए 9/11 की तरह का बर्बर आक्रमण अंजाम दे सकते हैं। कुछ वर्ष पहले अलकायदा के दहशतगर्दों ने स्पेन के मैड्रिड शहर और ब्रिटेन के शहर लंदन पर जबरदस्त आतंकवादी आक्रमण अंजाम दिया था। आतंकवादी आक्रमण के डर से खौफजदा जर्मनी के लीडरों को यह अंदेशा भी सता रहा है कि शरणार्थियों का नकाब ओढ़कर यदि कुछ जेहादी आतंकवादी भी जर्मनी में घुस आए तो फिर सुरक्षित और समृद्ध जर्मनी भी तबाह हो सकता है। आतंकवादी घुसपैठ के खौफ के कारणवश ही बेगुनाह शरणार्थियों को जर्मनी और यूरोप में मानवीय सहायता हासिल करने के लिए बहुत अधिक मुश्किलों से गुजरना पड़ रहा है।

पौधा लगाएं जीवन बचाएं

पौधा लगाना परमात्मा की उपासना का प्रतीक

पौधा लगाएं - प्राणी कोटी की रक्षा करें
सरकार के इस अप्रतीम प्रयास को सफल बनाएं

महायज्ञों का आयोजन कर
घर-घर में पेड़-पौधा लगाएं लगवाएं

तपस्या से जीवन का गुणवर्धन और मूल्यवृद्धि : ओमव्रत शास्त्री

ाज 13 सितम्बर, 2015 को देहरादून के विख्यात आर्य नेता इंजीनियर श्री प्रेमप्रकाश शर्मा के देहरादून के जाखन क्षेत्र स्थित निवास स्थान दून विहार में वेद प्रचार के अन्तर्गत वैदिक सत्संग का भव्य एवं विशाल आयोजन सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ जिसमें उनकी कालोनी के निवासियों सहित आर्यसमाज देहरादून से जुड़े अनेक प्रमुख बन्धुओं सहित बड़ी संख्या में स्त्री पुरूषों ने भाग लिया। कार्यक्रम प्रातः 8 बजे से आरम्भ होकर दिन के 12.30 बजे तक चला जिसमें चारों वेदों के सौ सौ प्रमुख मन्त्रों से यज्ञ आहुतियां दी गईं। तदन्तर धार्मिक भजन व अन्त में वैदिक धर्म की महत्ता एवं प्रासंगिकता पर सुन्दर उपदेश हुआ जिसकी सभी उपस्थित श्रोताओं ने सराहना की। सत्संग का आरम्भ वृहत्त यज्ञ से हुआ जिसके मुख्य यजमान श्री प्रेम प्रकाश शर्मा सपत्नीक थे। यज्ञ के ब्रह्मा आर्य समाज के सुप्रसिद्ध विद्वान श्री वेदवसु थे तथा मन्त्र पाठ गुरुकुल पौंधा के दो ब्रह्मचारियों श्री शिवम् एवं श्री ओम् प्रकाश ने किया। ब्रह्मचारियों के शुद्ध वेदमन्त्रोच्चारण ने वायुमण्डल को सात्विक ध्वनि व शब्दों से कर्ण प्रिय तथा आत्मा को आनन्द से भर दिया। आयोजन में भजनोपदेशक के रूप में श्री पं. ब्रह्मानन्द आर्य व ढोलक पर उनके साथ संगति श्री मोहर सिंह आर्य कर रहे थे। वेदमन्त्रों की व्याख्या और प्रवचन गुरूकुल महाविद्यालय ततारपुर उत्तरप्रदेश से पधारे वेदों के विद्वान और प्रभावशाली वक्ता श्री ओ३म्व्रत शास्त्री ने किया।

आयोजन का आरम्भ वष्हत्त यज्ञ से हुआ जिसमें क्रमशः ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद के सौ सौ मन्त्रों से आहुतियां दी गई। न केवल यजमान महोदय ने अपितु सत्संग में पधारे सभी लोगों को यज्ञ में आहुतियां प्रदान करने का अवसर दिया गया। यज्ञ में आये एक मन्त्र के अर्थ पर प्रकाश डालते हुए मुख्य वक्ता श्री ओम्व्रत शास्त्री ने कहा कि शरीर को चार भागों सिर, भुजा, उदर व चरणों में बांटा जा सकता है। उन्होंने कहा कि शरीर में सिर मुख्य होने के साथ शेष शरीर की तुलना में सबसे अधिक उपयोगी साधनों आंख, नाक, कान, मुंह, बुद्धि आदि से सम्पन्न है। इन साधनों से ही देखना, सुनना, बोलना, सूंघना व भोजन करना आदि किया जाता है। सर्दियों में जब हम सारे शरीर को गर्म वस्त्रों से ढक कर रक्षा करते हैं तब भी हमारा सिर व मुख खुला रहकर तप करता है। इसी प्रकार समाज में सिर व मुख के समान उपमा वाले ब्राह्मण कहलाते हैं जो समाज के सबसे श्रेष्ठ कार्य यथा वेदों सहित सभी विद्याओं का अध्ययन करना व कराना, वेद प्रचार करना, विद्या दान करना, स्वाध्याय करना, दान लेना व देना आदि कार्य करते हैं। हमारी हाथ वा भुजा हमारे पूरे शरीर की रक्षा करती हैं। इसी प्रकार से देश व समाज रूपी शरीर की रक्षा करने वालों को क्षत्रिय कहा जाता है। शरीर में उदर की तरह जो समाज व देश की सब आवश्यक वस्तुओं की पूर्ति व सबको वितरण करता है उसे वैश्य कहते हैं। शरीर में दो पैरों वा चरणों के समान जो सारे समाज को धारण करता व सेवा द्वारा उनके कार्यों में सहायता करता है उसे शूद्र कहते हैं। उन्होंने कहा कि यह चारों वर्ण परस्पर एक दूसरे से मिल जुल कर सहयोग से देश व समाज की उन्नति करते हैं। विद्वान वक्ता श्री ओमव्रत्त शास्त्री ने कहा कि जो वेद मन्त्रों को गाता है उसे गायत्री कहते हैं। वेद मन्त्रों के गाने वालों को ही अर्ची भी कहते हैं जो वेद मन्त्रों से अर्चना व पूजा करते हैं। यह अर्ची लोग परमात्मा के बताये कार्यों को करते हैं। इन अर्चना करने वालों को क्या लाभ होता है इसका उल्लेख विद्वान वक्ता ने किया। उन्होंने कहा कि यदि कोई व्यक्ति भोजन करने के बाद वमन कर देता है तो उसे भोजन का कोई लाभ नहीं होता। इसी प्रकार विद्या पढ़े व्यक्ति का उस विद्या के अनुसार आचरण न करने वाले को वमन करने के समान कोई लाभ नहीं होता। इसी प्रकार से वेद मन्त्रों को गाने से विशेष लाभ नहीं मिलता। विशेष लाभ वेद मन्त्र को गाने के साथ उसका अर्थ जानने व उसके अनुरूप आचरण करने से मिलता है। वेद मन्त्र गाने व मन्त्र की शिक्षा के अनुसार आचरण न करना ऐसा है कि परीक्षा में 100 नम्बर में से 10 नम्बर प्राप्त करना। मन्त्र अर्थ जानकर यदि आचरण भी करते हैं तो पूर्ण लाभ अर्थात 100 में से 100 नम्बरों की प्राप्ति का होना है।

अथववेद के 100 मन्त्रों से आहुतियां देने के बाद मन्त्रों के अर्थ बताते हुए विद्वान वक्ता श्री ओमव्रत शास्त्री ने कहा कि अथर्ववेद ज्ञान काण्ड कहलाता है। उन्होंने कहा कि जब कोई वृक्ष फल युक्त हो जाता है तो सबकी दृष्टि उस वृक्ष पर पड़ती है। वृक्ष पर लगे पके फलों को देखकर देखने देखनेवालों की इच्छा फलों को प्राप्त करने व तोड़ने तथा उनको खाने की होती है। जिन वृक्षों पर फल नहीं होते उनकी ओर ऐसी भावना किसी की नहीं होती। इसी प्रकार से गुणी व्यक्ति सब व्यक्तियों के द्वारा आकर्षित होता है और सब उससे मित्रता करना चाहते है जबकि गुणहीन से कोई मित्रता व सम्पर्क रखना नहीं चाहता। उन्होंने कहा कि यदि किसी मनुष्य के पास अधिक धन हो जाये और रक्षा के लिए उसके पास शस्त्र न हो तो वह डरा डरा सा रहता है। शस्त्र मिलने पर उसका भय दूर हो जाता है। इसी प्रकार से मनुष्य को वेदाध्ययन कर गुणों को प्राप्त कर अभय होना चाहिये। विद्वान वक्ता ने कहा कि मनुष्य का जीवन पीपल के एक पत्ते के समान है जो तेज हवा के आने पर टूट कर गिर जाता है तथा जिसे दोबारा वृक्ष पर लगाया नहीं जा सकता। इससे सम्बन्धित एक कविता की पंक्ति प्रस्तुत कर उन्होंने कहा कि 'पत्ता टूटा डाल से ले गई पवन उड़ाये, अब के बिछड़े न मिलेंगे दूर पड़ेंगे जाय।।' इसी प्रकार से मनुष्य का जीवन होता है कि एक बार यदि वह मृत्यु के आने पर परिवार से अलग हो जाये तो पुनः उस परिवार से जुड़ नहीं सकता। अतः मनुष्य को अपने इष्ट मित्रों, सम्बन्धियों सहित परिवार के सभी लोगों के साथ मधुर संबंध रखते हुए सबके प्रति सहयोग व सद्भावना से पूर्ण होना चाहिये। उन्होंने कहा कि मृत्यु के समय जैसी मति होती है वैसी ही आत्मा की गति होती है। हम मृत्यु के समय जैसे विचार मन में रखेंगे वैसा ही हमारा अगला जन्म होगा। इस कारण विद्वान वक्ता ने सबको वेदों का स्वाध्याय करने की प्रेरणा दी और कहा कि इससे अन्तिम समय में हमारे विचार वेदों से प्रभावित रहेंगे और अगले जन्म में हम अन्य सब चीजों को गौण जानकर

वेदों के विद्वान बनेंगे जबकि अन्य विचारों से हमारा मनुष्य जन्म का मिलता भी सम्भव नहीं है।

इस बीच यज्ञ भी चलता रहा और यज्ञ की पूर्णाहुति सम्पन्न की गई जिसके बाद सभी आगन्तुक श्रोताओं एवं परिवार जनों ने मिलकर प्रातराश (ब्रेक फास्ट) किया। कार्यक्रम पुनः श्री ब्रह्मानन्द आर्य जी के भजनों से आरम्भ हुआ। उन्होंने पूर्ण तन्मय होकर भजन 'विषयों में फंस कर ऐ प्राणी भगवान भजन को छोड़ दिया। है शोक ऋषि और मुनियों के सब चाल चलन को छोड़ दिया।' गाया जो बहुत प्रभावशाली था और जिससे सभी श्रोता भावविभोर हो गये। भजनोपदेशक महोदय ने कहा कि अपने संस्कारों के कारण ही हम यहां आये हैं। उन्होंने योग दर्शन के आधार पर कहा कि पिछले जन्म के हमारे प्रारब्ध से हमें जाति वा योनि, आयु व सुख दुख रूपी भोगों की प्राप्ति होती है। आपने एक अन्य भजन प्रस्तुत किया जिसके बोल थे 'कहने वाले कह जाते हैं सुन कर सुनने वाले। सार्थक उसी का जीवन है जो इन्हें जीवन में ढाले।।' मधुर भजन गायक ने एक अन्य भजन भी प्रस्तुत किया जिसके बोल थे 'दयानन्द जग को जगाने को आया। सनातन सत्य का डंका बजाने को आया।' श्री ब्रह्मानन्द आर्य के भजनों के बाद श्री ओमव्रत शास्त्री का प्रवचन हुआ।

श्री ओमव्रत शास्त्री ने अपने प्रवचन के आरम्भ में श्रोताओं से प्रश्न किया कि आप कमाते किस लिये हैं? उत्तर दिया गया कि खाने के लिए कमाते हैं। उन्होंने फिर पूछा कि आप खाते किस लिए हैं? उत्तर में कहा गया कि जीने के लिए। उन्होंने फिर पूछा कि आप जीते क्यों है? इस पर विद्वान वक्ता ने कहा कि इसका उत्तर लोगों के पास नहीं है। उन्होंने कहा कि बिना पत्र लिखा लिफाफा यदि डाक पेटी में डालेंगे तो वह क्या इच्छित व्यक्ति के पास पहुंचेगा? यह सार्थक कार्य नहीं है। उन्होंने कहा कि पशु खाने के लिए जीते हैं परन्तु हम पशु नहीं मनुष्य हैं। हमारे जीवन का कुछ अन्य उद्देश्य है। इसका उत्तर है कि हमारा जीवन परम पिता परमेश्वर की उपासना व उसकी भक्ति के लिए है। श्री ओमव्रत शास्त्री ने कहा कि आप डाक्टर, इंजीनियर, प्रोफेसर, राजनेता व अन्य कुछ भी बनिये, बन गये तो अच्छी बात है और यदि नहीं बने तो कोई बात नहीं। परन्तु सभी मनुष्यों को ईश्वर का भक्त अवश्य बनना चाहिये क्योंकि यही हमारे जीवन का उद्देश्य है। इसके बाद विद्वान वक्ता ने एक सामवेद के मन्त्र की व्याख्या की जिसमें 'अतप्ततनू' शब्द का प्रयोग हुआ है। उन्होंने कहा कि तप्त का अर्थ तपा हुआ और अतप्त का बिना तपा व अपरिपक्व होता है। तनु मनुष्य के शरीर को कहते हैं। मनुष्य के स्वयं को तपाये बिना परम पिता परमेश्वर की प्राप्ती होती नहीं है। अतः अपने जीवन के उद्देश्य की पूर्ति जो कि परम पिता ईश्वर की प्राप्ति है, इसके लिए तप करना चाहिये। विद्वान वक्ता ने बताया कि तप का अर्थ उत्कर्ष, सत्य, संगठन, जीवन, विद्या व प्रकाश आदि है तथा तप के विलोम अर्थ हैं अपकर्ष, अविद्या, विघटन, असत्य, अन्धकार व विनाश आदि।

श्री ओमव्रत शास्त्री ने अपने प्रवचन में आगे कहा कि हमने विगत 50 वर्षों में बहुत कुछ पाया है और बहुत कुछ खोया भी है। हमने चरित्र खोया और दुश्चरित्र पाया है। धन को प्राप्त किया है परन्तु दान की वृत्ति को खो दिया। शिक्षा तो पायी परन्तु सद्व्यवहार को खो दिया। 50 साल पहले रास्ते कच्चे थे परन्तु लोग पक्के थे। आज रास्ते पक्के हैं परन्तु लोग कच्चे हैं। 10 कदम जाने के लिए भी आज हम आटो देखते हैं। 50 साल पहले लोगों के घर कच्चे थे परन्तु लोग बड़े पक्के थे। क्या सुनना चाहिये और क्या नहीं सुनना चाहिये, इसे हमने खो दिया। गधा व कोई भी पशु गुटका नहीं खाता परन्तु आज का शिक्षित एजुकेटेड व्यक्ति इसे खाता है। श्री शास्त्री ने बताया कि तप का परिणाम मधुरता, विजय, सफलता और संगठन है। उन्होंने कहा कि तप का एक अर्थ सहनशीलता भी है। विद्वान वक्ता ने कहा कि युवा युवति का विवाह होता है। दोनों एक दूसरे को पसन्द करते हैं। विवाह में बहुत तैयारियां और व्यय किया जाता है। विवाह के बाद परस्पर व्यवहार में सहनशीलता न होने के कारण यदा कदा तलाक हो जाता है। यह जीवन में तप की कमी के कारण होता है। आर्योपदेशक श्री ओमव्रत शास्त्री ने अपने प्रवचन को जारी रखते हुए आगे कहा कि हमारे देश का इतिहास 1 अरब 96 करोड़ वर्षों से अधिक पुराना है। आज से लगभग 5,200 वर्ष पूर्व महाभारत का युद्ध हुआ था। महाभारत के समय तक हमारे देश में वैदिक व्यवस्था थी जिसमें कहीं किसी के द्वारा आत्महत्या का कोई उदाहरण नहीं मिलता। उन्होंने आत्महत्या के आंकड़े देकर बताया कि वर्ष 2009 में 1,27,151 तथा सन् 2010 में 1 लाख 30 हजार आत्महत्यायें देश में हुईं। आत्महत्या का प्रमुख कारण उन्होंने कटु व्यवहार, सहनशीलता की समाप्ती और तपस्या न होने को बताया। जो तपस्वी होगा वह कभी आत्महत्या नहीं कर सकता। परिवारों में होने वाली अनेक आत्महत्या की घटनाओं व उनके कारणों पर भी आपने प्रकाश डाला और कहा कि छोटी छोटी बातों पर लोग आत्महत्या करते हैं। पिता ने पुत्र से कुछ कह दिया तो नाराज होकर पुत्र आत्महत्या कर लेता है। इसी प्रकार परीक्षा में अनुतीर्ण होने व घर में किसी से कहा सुनी हो जाने पर भी ऐसी घटनायें हो जाती हैं। श्री शास्त्री ने देश में बढ़ रहे अन्धविश्वास व उसके दुष्परिणामों की चर्चा भी की और कहा कि आर्यावर्त्त की चिन्ता केवल आर्य समाज को है। प्रसिद्ध दादुभक्त का उदाहरण देकर उन्होंने कहा कि वह मधुर व्यवहार के लिए प्रसिद्ध थे। उन्होंने एक कोतवाल तथा दादुभक्त के बीच घटी घटना को सुनाकर श्रोताओं का द्रवित कर दिया जिससे श्रोताओं की आंखे गिली हो गयीं। चेतावनी देते हुए श्री शास्त्री ने कहा कि यदि आप तपस्या नहीं करेंगे तो आपके जीवन में भयावह दृश्य आ सकते हैं। तप व अतप्त का एक उदाहरण उन्होंने आम के फल पर घटाते हुए कहा कि जब आम्र के वृक्ष पर छोटी छोटी अम्बियां होती हैं और गर्मियों में आंधी चलती है तो वह अम्बियां टूट कर गिर जाती हैं जिनका कोई आर्थिक मूल्य नहीं होता परन्तु जब वृक्ष पर लगी अम्बियां आम बन कर पक जाती हैं तो इनका न केवल वजन बढ़ता है अपितु ग्राहक इसे अम्बियों की तुलना में कहीं अधिक बढ़े हुए मूल्य पर खरीदता है। इसका कारण उन्होंने अम्बियों में तप की कमी और पके आम में तप की अधिक मात्रा को बताया और इसका विश्लेषण भी किया जो श्रोताओं को बहुत पसन्द आया। महर्षि दयानन्द के तपस्वी जीवन का उदाहरण देकर उन्होंने कहा कि इसी प्रकार से तपस्या से जीवन का मूल्य बढ़ता है। उन्होंने कहा कि महाराणा

...शेष पृ. ७ पर

सेवा धर्म

—मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। उसके चारों ओर अपने निकट सम्बन्धी और पड़ोसियों के साथ मित्र व पशु–पक्षी आदि का समुदाय दर्षष्टिगोचर होता है। समाज में सभी मनुष्यों की शारीरिक, सामाजिक, शैक्षिक, स्वास्थ्य की स्थिति व आर्थिक स्थिति समान नहीं होती है। इनमें अन्तर हुआ करता है। यह सम्भव है कि एक व्यक्ति आर्थिक दर्षष्टि से सम्पन्न होने के साथ शारीरिक दर्षष्टि से भी स्वस्थ हो, शिक्षित व प्रतिष्ठित भी हो परन्तु ऐसा भी सम्भव है कि एक व्यक्ति निर्धन, अशिक्षित व अस्वस्थ या रोगी हो। ऐसी स्थिति में सम्पन्न व्यक्ति का क्या यह कर्तव्य नहीं बनता कि वह समाज के निर्बल लोगों की आर्थिक सहायता व सेवा करे? स्वस्थ युवा व धनी मानी लोगों का कर्तव्य है कि वह समाज के अस्वस्थ व निर्धन लोगों को उनकी आवश्यकता के अनुरूप यथासम्भव सेवा व आर्थिक सहायता करें जिससे कि वह अपना जीवन सामान्य रूप से व्यतीत कर सकें और समाज के निर्बल वर्ग की भी शारीरिक, बौद्धिक व आत्मिक उन्नति हो सके।

आईये, कुछ चर्चा धर्म की करते हैं। धर्म की अनेक परिभाषायें की जाती हैं जिनमें से एक है कि सभी मनुष्यों अपने जीवन में शुभ गुणों को धारण करना चाहिये। यह शुभ गुण व कर्म क्या हो सकते हैं? व्यक्तिगत गुणों में तो मनुष्य को अपने स्वास्थ्य को अनुकरणीय बनाने के लिए आहार, निद्रा, संयम व व्यायाम आदि के नियमों का पालन करना चाहिये। विद्यालयी व व्यवसायिक शिक्षा व ज्ञान के साथ सामाजिक ज्ञान व आध्यात्मिक ज्ञान में भी पूर्णता प्राप्त करने का प्रयास करना चाहिये। शुभ गुणों की चर्चा आने पर पहला गुण तो यह है कि उसे सत्य व धर्म का आचरण करना चाहिये। प्राचीन वैदिक शिक्षा में जब ब्रह्मचारी शिक्षा समाप्त कर गुरूकुल से लौटता था तो दीक्षान्त भाषण में उसका आचार्य जो शिक्षायें देता था उनमें पहली शिक्षा ''सत्यं वद्, धर्म चर तथा स्वाध्यायां मा प्रमदः'' होती थी। आज भी इन शिक्षाओं का महत्व निर्विवाद है। 'सत्यं वद' में हम कह सकते हैं कि मनुष्य के मन, मस्तिष्क व आत्मा में जो ज्ञान है, उसी के अनुरूप उसे व्यवहार करना चाहिये अर्थात् मन, वचन व कर्म में एकता होनी चाहिये। ऐसा नहीं होना चाहिये कि उसका आचरण उसके मन व आत्मा में निहित विचारों के प्रतिकूल हो। मन के ज्ञान के अनुसार ही वचन को बोलना व कर्मों का करना वास्तविक वा यथार्थ धर्म है। नियमित सदग्रन्थों का स्वाध्याय करने से मनुष्य के बौद्धिक ज्ञान में वृद्धि होने के साथ उसकी आत्मोन्नति भी होती है। अतः स्वाध्याय में प्रमाद करना अपनी आत्मा व जीवन की उन्नति में अवरोध लाना ही कहा जा सकता है। अब सेवा को धर्म से जोड़ कर देखते हैं। मनुस्मृति में धर्म की चर्चा करते हुए कहा गया है कि दूसरों के प्रति वह आचरण कदापि नहीं करना चाहिये जो आचरण हम दूसरे व्यक्तियों से अपने लिए पसन्द न करते हों। जिस प्रकार से हमें दूसरो का झूठ बोलना पसन्द नहीं है तो हमें भी किसी से असत्य का व्यवहार नहीं करना चाहिये। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि सत्य बोलना धर्म है। इसी प्रकार से यदि हम कष्ट या मुसीबत में फंस जायें तो हम दूसरों से सहायता की अपेक्षा करते हैं। इसी प्रकार से हमारा भी कर्तव्य है कि यदि हम कहीं किसी को कष्ट या मुसीबत में देंखे तो उसकी मदद करें। यही सिद्धान्त सेवा पर भी लागू होता है। दूसरों की मदद करना ही सेवा है। यदि समाज से दूसरों की मदद करने की भावना का विस्तार व प्रचार–प्रसार हो तो फिर किसी को चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं है। हम दूसरों की सेवा व मदद करेंगे तो आवश्यकता या आपातकाल में दूसरे भी हमारी मदद अवश्य करेंगे। अतः सभी मनुष्यों को दूसरों की सेवा का व्रत धारण करना चाहिये इससे हमारा समाज सामाजिक दृष्टि से उन्नत व सुखी होगा।

यज्ञ सनातन वैदिक धर्म संस्कर्षति का प्रमुख अंग है। यज्ञ देव पूजा, संगतिकरण तथा दान का समन्वित रूप होता है। देव पूजा में ईश्वर सहित सभी 33 जड़ व चेतन देवों की पूजा व सत्कार सम्मिलित है। संगतिकरण का तात्पर्य है कि वेद आदि शास्त्रों के विद्वानों व ज्ञानियों का संगतिकरण कर उनके ज्ञान व अनुभव को प्राप्त करना। यह संगतिकरण विद्वानों के उपदेशों के श्रवण, वार्तालाप, उनसे पढ़कर, शंका समाधान आदि के द्वारा होता है। यह भी एक प्रकार से विद्वानों व ज्ञानियों की सेवा ही होता है। हम उनकी सेवा करेंगे, उन्हें आदर व सम्मान देंगे, उनके आश्रमों व निवासों पर समित्पाणि होकर जायेंगे तभी उनसे ज्ञान मिलना सम्भव है। हमने स्वयं भी संगतिकरण से लाभ उठाया है। सत्संगों में जाने और विद्वानों के उपदेश सुनने में हमारी प्रवर्षत्ति रही है। जिस विद्वान ने जिस ग्रन्थ पर आधारित प्रवचन किया या अपने उपदेश में जिस शास्त्र या ग्रन्थ विशेष का उल्लेख किया, हमने उस ग्रन्थ को प्राप्त कर उसे पढ़ा जिससे हमें उस ग्रन्थ की विषय–वस्तु व उसके विस्तार व उसमें निहित व उद्घोषित तथ्यों का ज्ञान हो गया। इस प्रकार स्वाध्याय करते–करते हमारी आज की स्थिति आ गई और हम विगत 25 वर्षों से महापुरूषों के जीवनों व आध यात्मिक विषयों पर लेख आदि लिख लेते हैं। स्वाध्याय का हमारा व्रत चल रहा है। स्वाध्याय भी एक प्रकार से ग्रन्थ व पुस्तक के लेखक के साथ संगति ही होता है। ग्रन्थ को पढ़कर लेखक के प्रति हमारे अन्दर जो आदर के भाव उत्पन्न होते हैं उससे उस विद्वान की अप्रत्यक्ष रूप से सेवा हो जाती है। यदि स्वाध्याय की प्रवर्षत्ति न हो तो किसी लेखक द्वारा लिखी गई पुस्तक अनावश्यक सिद्ध हो जाती है और उसने अपने जीवन के अनुभव से पुस्तक के विषय में जो ज्ञान व अनुभव प्रस्तुत किये हैं, उससे भावी पीढ़ी लाभान्वित नही हो पाती। अतः जीवित विद्वानों का प्रत्यक्ष रूप से संगतिकरण कर उनकी मौखिक व दान आदि से सेवा करना तथा दिवंगत विद्वानों के ग्रन्थों को

पढ़ना भी एक प्रकार से सेवा का उदाहरण होने के साथ जीवन में अनेकशः लाभ प्रदान करता है।

हम एक छोटा सा सेवा व सहायता का उदाहरण प्रस्तुत कर रहे थे। एक बार वैदिक धर्म के विश्व विख्यात प्रचारक महर्षि दयानन्द किसी स्थान पर विराजमान थे। उन्होंने देखा कि सामने सड़क पर एक झोटा गाड़ी सामान से लदी हुई चढ़ाई पर जा रही है। भार अधिक होने के कारण झोटा प्रयास कर भी आगे नहीं बढ़ पा रहा है। उसका मालिक सोटे से बार–बार उसे पीट रहा है परन्तु वह झोटा प्रयत्न करने पर भी आगे बढ़ने में असमर्थ है। दयावान महर्षि दयानन्द अपने स्थान से उठे और उस गाड़ी के पीछे जाकर उसे आगे बढ़ाने में अपने बल का सहयोग किया जिससे वह गाड़ी आसानी से चढ़ाई पार कर गई। ऐसा करने पर गाड़ी का मालिक बहुत ही कष्तज्ञता अनुभव कर हाथ जोड़कर दयानन्द जी का धन्यवाद कर रहा था तो उन्होंने कहा कि इसकी कोई आवश्यकता नहीं है। यह तो उनका कर्तव्य व धर्म था। यह उदाहरण यद्यपि छोटा है परन्तु इससे बहुत कुछ सीखा जा सकता है। ऐसे उदाहरण हमें यदा–कदा देखने को मिलते रहते हैं। यदि हम इसे अपनी प्रवष्त्ति में सम्मिलित कर लें तो इससे समाज में एक अच्छा संदेश जा सकता है और एक अच्छी परम्परा को स्थापित किया जा सकता है। यहां हम यह भी जोड़ना चाहते हैं कि ईश्वर के गुणों का अध्ययन करने पर हमें उसमें दया और करूणा का गुण भी ज्ञात होता है। यदि माता–पिता के समान हमारे जन्मदाता परमात्मा में दया और करूणा का गुण है तो हमारे अन्दर भी यह गुण अवश्य ही विद्यमान होना चाहिये। यदि हम ऐसा नहीं करते तो हम ईश्वर को अप्रसन्न करते हैं और इससे हमारी ही हानि होती है। हमारा वेदों के विद्वान और देश के विभिन्न भागों में 9 आर्ष गुरूकुलों के संचालक स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती से निकट सम्पर्क है। कुछ वर्ष पूर्व स्वामीजी इतने रोगी हो गये कि उन्हें लगभग 6 माह से अधिक शय्या पर ही रहना पड़ा। कैंसर जैसा भयानक रोग उन्हें बताया गया। उनकी चिकित्सा चलती रही और वह स्वस्थ हो गये। इसके अतिरिक्त भी उन्हें अनेक बार अनेक प्रकार की शारीरिक व्याधियों ने आक्रान्त किया परन्तु वह स्वस्थ होते गये। हमने एक बार उनसे पूछा कि स्वामीजी आप अनेक रोगों से अनेक बार त्रस्त रहे और असाध्य रोग पर भी आपने विजय प्राप्त की, इसका मुख्य श्रेय आप किस बात को देते हैं तो उन्होंने कहा कि मैंने जीवन में वृद्धों व विद्वानों की यथासम्भव सेवा की है। मेरा बार–बार रोगाक्रान्त होकर पुनः स्वस्थ हो जाना, मैं उनके आशीर्वाद का परिणाम मानता हूं। हमें लगता है कि उनकी यह बात सर्वथा सत्य है। सेवा करने पर हमें जो शुभकामनायें व आशीर्वाद मिलता है उससे हमें जीवन में आयु, विद्या, यश व बल की प्राप्ति होती है, ऐसा मनुस्मृति में वर्णित है और इस ग्रन्थ के यह विचार व विधान सत्य सिद्ध हैं तथा स्वामीजी का जीवन इसका प्रमाण है। सेवा में अनेक रूप हो सकते हैं। किसी रोगी की सेवा करना भी सेवा के ही अन्तर्गत आता है। रोगी की सेवा उसके लिए अच्छा भोजन, वस्त्र, ओषधियां व चिकित्सा की सुविधा प्रदान कर की जा सकती है। आज कल चिकित्सा के क्षेत्र में अनाचार चरम पर सुना जाता है। हम भी अपने जीवन में यदा–कदा इसका अनुभव करते रहते हैं। चिकित्सों को तो ईश्वर के बाद दूसरा स्थान प्राप्त है। रोगियों के प्रति उनकी सद्भावना होनी चाहिये न कि येन केन प्रकारेण उनसे अधिकाधिक धन कमाने की प्रवष्त्ति। परन्तु स्वार्थ की प्रवष्त्ति का आजकल सभी वर्गों में अमर्यादित रूप से विस्तार हो रहा है जिससे समाज में सर्वत्र चिन्ता व दुःख अनुभव किया जा रहा है। इसका भविष्य में क्या परिणाम होगा, इसका अनुमान लगाना कठिन है। हमें लगता है कि ऐसा वैदिक शिक्षा से दूर जाने के कारण हुआ है। जब तक बच्चों को आरम्भ से वेद व उपनिषद के अनुसार आध्यात्मिक विज्ञान की शिक्षा नहीं दी जायेगी, निःस्वार्थ जीवन व्यतीत करने वाले सत्पुरूष समाज में उत्पन्न नही किये जा सकते। अपवाद तो हो सकते हैं परन्तु शुभ गुणों से युक्त मनुष्य का निर्माण वैदिक आध्यात्मिक शिक्षा व संस्कारों से होना ही सम्भव है। हम समझते हैं कि जीवन को सफल करने के लिए हमें आपने चारों ओर के वातावरण में सबको स्वस्थ, शिक्षित व सम्पन्न बनाने का प्रयास व ऐसी सद्भावनाओं को अपने हष्दय में स्थान देना होगा, साथ हि इसके लिए मन, वचन व कर्म से प्रयास व सहयोग करना होगा, तभी हम मनुष्य जीवन को सार्थक कर सकेंगे। वैभव पूर्ण जीवन जीना ही प्रशस्त जीवन नहीं है अपितु दूसरों के दुःखों का निवारण करना और सबकी प्रसन्नता में प्रसन्न होना ही वास्तविक मनुष्य जीवन है

—मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून

...पृ. ५ का शेष

प्रताप और नेताजी सुभाष चन्द्र बोस का मूल्य उनके जीवन काल में भी था, आज भी है और हमेशा रहेगा क्योंकि इन्होंने घोर तप किया था। श्री शास्त्री ने श्रोताओं को कहा कि कच्चा व तपस्या से रहित व्यक्ति अपने दायित्वों की पूर्ति नहीं कर सकता। तप करके ही हम अपना, अपने परिवार का, समाज और देश का कल्याण कर सकते हैं। उन्होंने कच्ची व पक्की ईंटों का उदाहरण देकर कहा कि कच्ची ईंटों को कोई 1000 रूपयों की 1000 नहीं लेता जबकि पक्की तपी ईंटों को 6000 रूपयों में 1000 लेने को तैयार होता है।`

आर्यसमाज लक्ष्मण चौक के यशस्वी प्रधान एवं वेद प्रचार सप्ताह के अक्ष्यक्ष श्री के.पी. सिंह जी ने अपने सम्बोधान में श्री प्रेमप्रकाश शर्मा के गुणों व कर्मठता की प्रशंसा की और आर्यसमाज में जाने व स्वाध्याय की प्रेरणा की जिससे अंघविश्वासों से रक्षा होगी। श्री प्रेम प्रकाश शर्मा जी ने भी श्रोताओं को सम्बोधित किया। श्री शर्मा देहरादून के प्रसिद्ध वैदिक साधन आश्रम, तपोवन के मंत्री भी हैं। उन्होंने तपोवन में 20 से 27 सितम्बर, 2015 तक आर्यजगत के विख्यात युवा विद्वान श्री आशीष दर्शनाचार्य के सान्निध्य एवं निर्देशन में आयोजित योग साधना शिविर में सबको आमंत्रित किया। उन्होंने सभी का सत्संग में पधारने के लिए धन्यवाद करने के साथ सबको भोजन के लिए आमंत्रित किया। सामूहिक प्रीतिभोज के बाद सत्संग का आयोजन सम्पन्न हुआ।

‘सभी चार आश्रमों में श्रेष्ठ व ज्येष्ठ गृहस्थाश्रम’

–मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून

वैदिक जीवन चार आश्रम और चार वर्णों पर केन्द्रित व्यवस्था व प्रणाली है। ब्रह्मचर्य, गष्हस्थ, वानप्रस्थ और संन्यास यह चार आश्रम हैं और शूद्र, वैश्य, क्षत्रिय और ब्राह्मण यह चार वर्ण कहलाते हैं। जन्म के समय सभी बच्चे शूद्र पैदा होते हैं। गुरूकुल व विद्यालय में अध्ययन कर उनके जैसे गुण–कर्म–स्वभाव व योग्यता होती है उसके अनुसार ही उन्हें वैश्य, क्षत्रिय या ब्राह्मण वर्ण आचार्यों व शासन व्यवस्था द्वारा दिये जाने का विध ाान वैदिक काल में था जो महाभारत काल के बाद जन्म के आधार पर अनेक जातियों में परिवर्तित हो गया। वेदानुसार चार वर्ण मनुष्यों के गुण, कर्म व स्वभाव पर आधारित हैं तो चार आश्रम मनुष्य की औसत वायु लगभग 100 वर्ष के पच्चीस पच्चीस वर्ष के क्रमशः चार सोपान व भाग हैं। प्रथम भाग जन्म से आरम्भ होकर लगभग 25 वर्षों तक का होता है जिसे आयु का **ब्रह्मचर्यकाल** कहते हैं। जीवन के ब्रह्मचर्यकाल में सन्तान व व्यक्ति को माता–पिता–आचार्य के सहयोग से पूर्ण ब्रह्मचर्य अर्थात् सभी इन्द्रियों के संयम, तप व पुरुषार्थ को करते हुए अधिक से अधिक विद्याओं जिनमें वेदाध्ययन प्रमुख है, का अर्जन करना होता है। कन्याओं के लिए यह आयु 16 वर्ष या कुछ अधिक होती है क्योंकि वैदिक व्यवस्था में युवक द्वारा न्यूनतम पच्चीस वर्ष और कन्या की आयु 16 वर्ष की हो जाने पर उन्हें विवाह करने की अनुमति है। **विवाह का होना गष्हस्थ आश्रम में प्रवेश करना होता है।** विवाह के बाद जो मुख्य कार्य करने होते हैं उसमें ब्रह्मचर्य के नियमों का पालन करते हुए आजीविका का चयन और उसका निर्वाह करने के साथ धर्म पूर्वक अर्थात् शास्त्रीय नियमों का पालन करते हुए श्रेष्ठ सन्तानों को उत्पन्न करना, उनका पालन करना व उनके अध्ययन आदि की व्यवस्था करना होता है। गष्हस्थ आश्रमी व्यक्ति को इसके साथ नियत समय पर प्रातः सायं योग दर्शन पद्धति व महर्षि दयानन्द निर्दिष्ट वेद विधि से प्रातःसायं ईश्वरोपासना, दैनिक यज्ञ, पितष्यज्ञ, अतिथि यज्ञ एवं बलिवैश्वदेव यज्ञ भी यथासमय व यथाशक्ति करने होते हैं। गष्हस्थ आश्रम में रहते हुए सभी स्त्री पुरुषों को सबसे प्रीतिपूर्वक, धर्मानुसार, यथायोग्य व्यवहार करने के साथ देश व समाज सेवा के श्रेष्ठ कार्यों यथा वेद विद्या के अध ययन–अध्यापन, यज्ञ व परोपकार आदि कार्यों में यथाशक्ति दान व सहयोग भी करना होता है। 50 वर्ष की आयु तक गष्हस्थ जीवन में रहकर जब पुत्र पुत्रियों के विवाह हो जाये और सिर के बाल श्वेत होने लगे तब गष्हस्थ जीवन का त्याग कर वन में जाकर स्वाध्याय व शास्त्रों का अध्ययन करते हुए ईश्वर प्राप्ति की साध ाना में समय व्यतीत करना होता है। 25 वर्षों तक इन कार्यों का अभ्यास कर संन्यास लेने का विधान है जिसमें सभी उत्तरदायित्वों से पष्थक, निवष्त वा उनका त्याग कर देश व समाज के कल्याण की भावना से सद्ज्ञान वेदों की शिक्षाओं का गष्हस्थियों में प्रचार प्रसार करना होता है। इस संन्यास आश्रम की स्थिति में भी अधिक ध्यान ईश्वर प्राप्ति के लिए साधना में लगाना होता है क्योंकि ईश्वर साक्षात्कार कर अपना परलोक सुधार करना भी मनुष्य व जीवात्मा का प्रमुख कर्तव्य है। इस प्रकार से वेदों से पुष्ट चार आश्रमों का विधान वैदिक आश्रम व्यवस्था कहलाता है जो समूचे मानव समाज में सर्वत्र किंचित भिन्न भिन्न रूपों में आज भी विद्यमान दष्टिगोचर होता है और यही सर्वाधिक श्रेष्ठतम सामाजिक व्यवस्था है।

महर्षि दयानन्द (1825–1883) के समय में देशवासी अन्धविश्वासों व विदेशियों की दासता से ग्रसित थे और आश्रम व्यवस्था का महत्व भूल चुके थे। जो व्यक्ति जिस अवस्था में होता था उसी को श्रेष्ठ व ज्येष्ठ मानता था। ब्रह्चारी स्वयं को चारों आश्रमों में ज्येष्ठ व श्रेष्ठ तथा वानप्रस्थी व संन्यासी अपने अपने को ज्येष्ठ व श्रेष्ठ मानते थे। गष्हस्थी क्योंकि प्रायः युवा होते थे अतः वह अपने से अधिक आयु वाले वानप्रस्थियों व संन्यासियों को इस बारे में कुछ कह नहीं सकते थे और इस विषयक शास्त्रीय व प्रमाणित सोच व विचार भी उनमें नहीं था। हमारे शास्त्रों में गुरूकुल में अध्ययनरत ब्रह्मारियों को विशेष महत्व दिया गया है। शास्त्र कहते हैं कि यदि ब्रह्मचारी किसी रथ में कहीं जा रहा है और सामने राजा व अन्य लोग मार्ग में किसी चौराहे पर

आ जाये तो उस अवस्था में पहले जाने का अधिकार ब्रह्मचारी का होता है। इसका कारण विद्या को महत्व दिया जाना है। यह एक प्रकार से हमारे देश में वेद विद्या को महत्व प्रदान करने के कारण व्यवस्था दी गई थी जो युक्ति व तर्क संगत है। इन सब परिस्थितियों को जानते समझते हुए जब महर्षि दयानन्द ने सन् 1874 व 1883 में आदिम सत्यार्थ प्रकाश व उसके संशोधित संस्करण तैयार किये तो उन्होंने भी चार आश्रमों में ज्येष्ठ आश्रम कौन सा है? इस पर भी विचार किया। उनके विचार तर्क व युक्ति संगत एवं स्थिति का नीर क्षीर व सारगर्भित विश्लेषण करते हैं। पाठकों के लाभार्थ उनके विचार प्रस्तुत हैं।

सत्यार्थ प्रकाश ग्रन्थ का चौथा समुल्लास समावर्तन, विवाह और गष्हस्थाश्रम पर महर्षि दयानन्द का वैदिक मान्यताओं पर उपदेश है। इस समुल्लास के अन्त में उन्होंने गष्हस्थाश्रम पर प्रश्न करते हुए कहा कि **ग्रहाश्रम सब से छोटा वा बड़ा है?** इसका उत्तर देते हुए वह लिखते हैं कि **अपने–अपने कर्त्तव्यकर्मों में सब बड़े हैं।** परन्तु यथा **नदीनदाः सर्वे सागरे यान्ति संस्थितिम्। तथैवाश्रमिणः सर्वे गष्हस्थे यान्ति संस्थितिम्।।1।। यथा वायुं समाश्रित्य वर्त्तन्ते सर्वजन्तवः। तथा गष्हस्थमाश्रित्य वर्त्तन्ते सर्व आश्रमाः।।2।। यस्मात्त्रयोऽप्याश्रमिणो दानेनान्नेन चान्वहम्। गष्हस्थेनैव धार्य्यन्ते तस्माज्जयेष्ठाश्रमो गष्ही।।3।। स संधार्य्यः प्रयत्नेन स्वर्गमक्षयमिच्छता। सुखं चेहेच्छता नित्यं योऽधार्यो दुर्बलेन्द्रियैः।।4।।** (यह चारों मनुस्मषति के श्लोक हैं)।

मनुस्मषति के इन चार श्लोकों का अर्थ करते हुए महर्षि दयानन्द लिखते हैं कि जैसे नदी और बड़े–बड़े नद तब तक भ्रमते ही रहते हैं जब तक समुद्र को प्राप्त नहीं होते, वैसे गष्हस्थ ही के आश्रय से सब आश्रम स्थिर रहते हैं।।1।। बिना इस आश्रम के किसी आश्रम का कोई व्यवहार सिद्ध नहीं होता है।।2।। **जिस से ब्रह्मचारी, वानप्रस्थ और संन्यासी तीन आश्रमों को दान और अन्नादि देके प्रतिदिन गष्हस्थ ही धारण करता है इससे गष्हस्थ ज्येष्ठाश्रम है, अर्थात् सब व्यवहारों में धुरन्धर कहाता है।।3।।** इसलिये जो (अक्षय) मोक्ष और संसार के सुख की इच्छा करता हो वह प्रयत्न से गष्हाश्रम का ध ाारण करे। जो गष्हाश्रम दुर्बलेन्द्रिय अर्थात् भीरु और निर्बल पुरुषों से धारण करने के योग्य नहीं है उसको (भीरु व निर्बल लोगों से इतर स्त्री पुरुष) अच्छे प्रकार धारण करे।।4।। महर्षि दयानन्द आगे लिखते हैं कि इसलिये जितना कुछ व्यवहार संसार में है उस का आधार गष्हाश्रम है। **जो यह गष्हाश्रम न होता तो सन्तानोत्पत्ति के न होने से ब्रह्मचर्य, वानप्रस्थ और संन्यास आश्रम कहां से हो सकते? जो कोई गष्हाश्रम की निन्दा करता है वही निन्दनीय है और जो प्रशंसा करता है वही प्रशंसनीय है। परन्तु तभी गष्हाश्रम में सुख होता है जब स्त्री पुरुष दोनों परस्पर प्रसन्न, विद्वान, पुरुषार्थी और सब प्रकार के व्यवहार के ज्ञाता हों। इसलिये गष्हाश्रम के सुख का मुख्य कारण ब्रह्मचर्य (सभी इन्द्रियों व इच्छाओं का संयम व उन पर नियंत्रण) और पूर्वोक्त स्वयंवर (आजकल प्रचलित नाम लव मैरिज) विवाह है।**

गष्हस्थाश्रम की ज्येष्ठता के विषय में महर्षि दयानन्द के समय में जो भ्रान्ति थी उसको उन्होंने सदा सदा के लिए दूर कर दिया। महर्षि दयानन्द के इन विचारों को भारतीय वा हिन्दू मत ने पूर्णतः स्वीकार किया है, यह अच्छी प्रशंसनीय बात है। यदि हमारा हिन्दू समाज मूर्तिपूजा, अवतारवाद, फलितज्योतिष, मष्तक श्राद्ध को छोड़कर वैदिक मान्यताओं को अपना ले तथा विवाह में जन्मपत्री को महत्व न देकर युवक व युवती के गुणकर्मस्वभाव को महत्व दें और जन्मना जाति प्रथा को समाप्त कर दें, तो देश व समाज को बहुत लाभ हो सकता है क्योंकि पौराणिक मान्यताओं का आधार सत्य पर नहीं है जिसे महर्षि दयानन्द ने अपने समय में शास्त्रीय प्रमाणों के साथ युक्ति व तर्क से भी सिद्ध किया है। यहां यह भी ध्यान देने योग्य है कि गष्हस्थाश्रम में रहते हुए मनुष्यों को लोभी व स्वार्थी न होकर दानी व परोपकारी होना चाहिये, यही प्रत्येक व्यक्ति के निजी व समाज के हित में होता है। दूसरी महत्वपूर्ण बात है कि गष्हस्थ में रहते हुए सभी को ब्रह्मचर्य का पालन करना चाहिये जिससे सभी निरोगी होकर दीघार्य हों। आज रोगों व अल्पायुष्य का कारण हमारा दूषित खान–पान, अनियमित दिनचर्या, बड़ी बड़ी महत्वाकांक्षाओं संबंधी तनाव एवं वैदिक जीवन मूल्यों से दूर जाना है। वैदिक मूल्य वा वैदिक जीवन पद्धति ही आज की समस्त समस्याओं का एकमात्र निदान है। आईये, वेद की शरण लेकर जीवन को सुखी व जीवन के लक्ष्य मोक्ष की प्राप्ति की ओर आगे बढ़ें व उसे प्राप्त करें।

అసలు మహాత్ముడు

అష్టకష్టాలతో అమృత్‌సర్ కాంగ్రెస్

- ఎం.వి.ఆర్.శాస్త్రి

"Is it true that so many among you who make the loudest noises about the acquisition of political rights, are not able to overcome their feeling of revulsion for those sixty millions of India who are suffering insustice, your brothers whom you regard as untouchable?.. Sixty million brothers... whom you have cut off and thrown away... I make this one appeal to all of you. Purify your heart with the water of love and promise that these millions will not remain for you untouchables... Their sons and daughters will study in our schools, their men and women will participate in our societies and all of us will join hands to realise the fulfilment of our national goal."

మీలో చాలా మంది రాజకీయ హక్కుల కోసం మహా ఆర్భాటం చేస్తుంటారే? మీ దృష్టిలో అంటరానివాళ్లయి, అన్యాయానికి గురి అవుతున్న ఆరు కోట్ల సోదరుల పట్ల మీకున్న ఏహ్యభావాన్ని మీరు తొలగించు కోగలిగారా? ఆ ఆరుకోట్ల మంది మీరు తెగ తెంపి బయట పారవేసిన మీ సోదరులు కారా? మీ అందరినీ నేను కోరేదొక్కటే. ప్రేమ అనే నీటితో మీ హృదయాలను శుద్ధి చేయండి. ఈ కోట్లాది సోదరులను ఇంకెంద మాత్రమూ అస్పృశ్యు లుగా చూడబోమని మాట ఇవ్వండి. వారి బిడ్డలను మన పాఠశాలల్లోనే చదవనిస్తామని చెప్పండి. వారి స్త్రీ పురుషులను మన సమాజంలో కలుపు కుంటామనీ, జాతీయ లక్ష్యాన్ని సాధించ టానికి వారూ మనమూ చేతులు కలుపు తామనీ చెప్పండి.

కిందటి శతాబ్దంలో సహ్య నిరాకరణో ద్యమం ఇంటా మొదలే కాకముందు భారత జాతీయ కాంగ్రెసు మహాసభ నుద్దేశించి ఒక గొప్ప నాయకుడు చేసిన ఉద్బోధ ఇది! ఇలా చెప్పగానే చాలామందికి వెంటనే మహాత్మా గాంధి గారు గుర్తుకొస్తారు.

ఔను మరి. అంటరానితనాన్ని పారదోల డానికి అహరహం పరితపించి నవాడు... స్వరాజ్యం సాధించటం కంటే అస్పృశ్యత పోగొట్టటం ముఖ్యమని ఘోషించినవాడు.. నూటికి నూరుపాళ్లు అస్పృశ్యత నిర్మూలిస్తే తప్ప దేశంలో ఏ ప్రాంతానికీ సత్యాగ్రహం చేపటే అర్హత ఉండదని నిక్కచ్చిగా

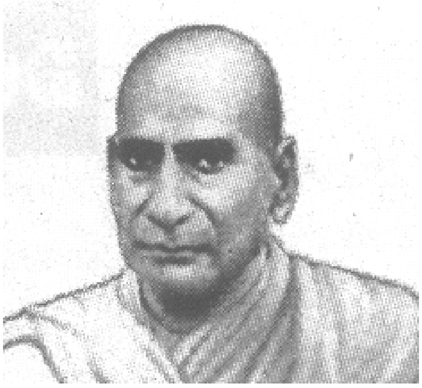

నిర్బంధించినవాడు లి మహాత్ముడేనని ఎందరి నోటో విన్నాము. చరిత్ర పుస్తకాల్లో తెగ చదివాము కదా?

నిజానికి-గాంధీగారి కంటే చాలాముందే అస్పృశ్యత నిర్మూలనకు చిత్తశుద్ధితో ఉద్యమించినవాడు... ఆ క్రమంలో కల్లనూ కపటాన్నీ నిర్భయంగా ఎదిరించి, గాంధీ గారితో సహా ఎందరో మహా నాయకులకు కంటగింపు అయనవాడు స్వామి శ్రద్ధానంద. 1919 డిసెంబరు చివరిలో చరిత్రాత్మకమైన అమృత్‌సర్ కాంగ్రెస్ మహాసభలో అయనే పై మాటలు అన్నాడు.

అసలు అమృత్‌సర్ కాంగ్రెస్ జరిగిందే స్వామి శ్రద్ధానంద పూనిక వల్ల. ఆ ఏటి మహాసభను అక్కడ జరపాలని ముందు నిశ్చయమైంది. బ్రిటిషు ప్రభుత్వం మార్షల్ లా విధించి పంజాబ్‌ను చెరబట్టాక కాంగ్రెసు నాయకులకు కాళ్లు చల్లబడ్డాయి. తెల్లదొర తనం పైశాచికంగా పేట్రేగి జలియన్ వాలాబాగ్‌లో వెయ్యిమందికి పైగా అమాయ కులను ఊచకోత కోసిన ఘోర దురంతం అమృత్‌సర్‌లోనే జరిగింది. మళ్లీ అక్కడే కాంగ్రెసు మహాసభలను పెడతామంటే గొడవలు, సమస్యలు ఎన్ని వస్తాయోనని కాంగ్రెసు పెద్దలు భయపడ్డారు. పంజాబ్ వెలుపల ఇంకో చోటికి కార్యక్రమాన్ని మార్చుకోవాలని తలిచి, ప్రత్యామ్నాయం ఎక్కడైతే బాగుంటుందా అని వారు మల్లగుల్లాలు పడుతున్న సమయాన, ముందు అనుకున్న ప్రకారం మృత్‌సర్‌లోనే జరిపి తీరాలని పట్టుబట్టినవాడు శ్రద్ధానంద. సర్కారు సమ్మతిస్తుందా, శాంతిభద్రతల సమస్యలు తలెత్తకుండా ఉంటాయా... అని మోతీలాల్ నెహ్రూ వంటి అగ్రనాయకులు అనుమానించగా, అవన్నీ నేను చూసు కుంటానని స్వామీజీ భరోసా ఇచ్చాడు. మార్షల్ లా మూలంగా పంజాబ్ ప్రజల ధైర్యం అసలే సన్నగిల్లింది. పర్యవసానాలకు వెరిచి సభాస్థలాన్ని పంజాబ్ బయటికి మార్చుకుంటే మొత్తం రాజకీయ ఉద్యమం చచ్చుబడుతుందని గట్టిగా వాదించి, 1919 జూన్ 8న అలహాబాద్ సమావేశంలో కాంగ్రెసు వర్కింగ్ కమిటీని ఒప్పించాడు.

దేశమంతటి నుంచి ఎన్నో వేల మంది ప్రతినిధులు హాజరయ్యే కాంగ్రెసు మహాసభలను నిర్వహించడం మామూలు రోజుల్లోనే అంగబలం, అర్థబలం సమృద్ధిగా ఉన్న వారికే కష్టం. పంజాబ్ మొత్తం ఒక పెద్ద జైలులా మారి, మార్షల్ లా నరకంలో జనజీవనం యమయాతనలు పడుతున్న స్థితిలో అలాంటి మహాసభలను దాదాపు ఒంటిచేత్తో నిభాయించడమంటేనో?

స్వామిజీ భారమంతా తనపైన వేసుకుని అమృత్‌సర్‌కు తిరిగి వెళ్లేసరికి సి.ఐ.డి.లకు ఉప్పందింది. అసలే పరిస్థితులు బాగా లేనప్పుడు కాంగ్రెస్ సభలు కూడా పెట్టి బయటి రాష్ట్రాల నుంచి వేల మందిని సమీకరిస్తే శాంతికి భంగం కలుగుతుందని, రాజద్రోహ కార్యకలాపాలు పెచ్చుమీరు తాయని కొంతమంది పుర ప్రముఖుల పేరు మీద సర్కారీ ఏజంట్లు ఒక కరపత్రం వేయించారు. వాకబు చేస్తే అది బనాయింపు వ్యవహారమని తేలింది. దానితో తమకు సంబంధం లేదని, ఆ ప్రముఖులలోనే కొందరిచేత చెప్పించి, మరి కొందరు పెద్ద

వేదం తెలుసుకోవడం ద్వారా సమస్యలు తొలగిపోతాయని అన్నారు. దేశాన్ని ముస్లిం రాజులు పరిపాలిస్తున్న రోజుల్లో హిందూ దేశాన్ని ఇస్లామిక్ దేశంగా రూపొందించ డానికి జరుగుతున్న కుట్రలను తిప్పికొట్ట డానికి దేశంలో ఆర్యసమాజ్ ఆవిర్భ వించిందని జంట నగరాల ఆర్య సమాజ్ అధ్యక్షుడు విఠల్ ఆర్య తెలిపారు. ఈ కార్యక్రమంలో హైదరాబాద్ ఆర్యసమాజ్ ప్రధాన కార్యదర్శి హరికిషన్ వేద, సికిందరాబాద్ శాఖ అధ్యక్షుడు మామిడి శ్రీనివాస్, ప్రధాన కార్యదర్శి మరిపల్లి పండరి తదితరులు పాల్గొన్నారు. ఈ సందర్భంగా డాక్టర్ వసుధ, అరవింద్‌శాస్త్రి ఆధ్వర్యంలో యజ్ఞం నిర్వహించారు.

పూర్తి హర్తాళ్ మార్చి 30నే జరిపేశాము కదా అని ఢిల్లీవాసులు ఊరుకోలేదు. మిగతా దేశంతోబాటు 1919 ఏప్రిల్ 6న కూడా వారు పట్టుపట్టి హర్తాళ్ చేశారు. దుకాణాలన్నీ స్వచ్ఛందంగా బంద్ అయ్యాయి. జనజీవితం స్తంభించింది.

ఆ రోజు ఉదయమే ఫతేపూరి మసీదులో వేల మంది గమికూడారు. మార్చి 30 కాల్పుల్లో మరణించిన వారి ఆత్మశాంతికి శ్రద్ధానంద స్వామి అందరి కోరిక మీద ప్రార్థనలు నిర్వహించాడు. మధ్యాహ్నం ఎడ్వర్డు పార్కులో ఇరవై వేల మందితో సభ. సాయంత్రం దర్యాగంజ్‌లో బ్రహ్మాండమైన బహిరంగసభ. లక్ష మందికి పైగా దానికి హాజరయ్యారు. అదిగాక ఎనిమిది చోట్ల కిక్కిరిసిన సభలు. ఢిల్లీ నగరమంతా బ్రిటిష్ దమననీతిపై పిడికిలి బిగించింది. అందరి లోనూ జాతీయ భావం, పోరాట దీక్ష ఉరకలు వేస్తున్నాయి. అందరికీ స్ఫూర్తి నిచ్చినవాడు మహాత్మాగాంధి.

మనుషులను కూడా జోడించి – మహాసభలను సమర్థిస్తూ శ్రద్ధానంద పోటీ కరపత్రం వేయించాడు. ఎక్కడెక్కడి వారినీ కలిసి, నచ్చచెప్పి, ఒక ఆహ్వాన సంఘాన్ని ఏర్పరచగలిగాడు. కార్యదర్శులు, సహాయ కార్యదర్శులు, కష్టం మీద ఒక ఉపాధ్యక్షుడు దొరికారు. కాని ఆహ్వాన సంఘం అధ్యక్షుడుగా ఉండటానికి మాత్రం ఎవరికీ ధైర్యం చాలలేదు. కొంతకాలం కిందటి వరకూ జాతీయోద్యమంలో, కాంగ్రెసు కార్యకలాపాల్లో చురుకుగా పాల్గొన్న పెద్ద తలకాయలు కూడా డయ్యర్ దెబ్బకు హడలిపోయారు. మా వల్ల కాదు అని చేతులెత్తేసి చివరికి అందరూ ఆహ్వాన సంఘం అధ్యక్షుడిగా మీరే ఉండాలని శ్రద్ధానందను బలవంతపెట్టారు.

కాంగ్‌డీ గురుకులాన్ని కష్టపడి ఒక గాడిన పెట్టాక మున్షీరాం సన్యసించి, శ్రద్ధానందగా రూపాంతరం చెందింది శేష జీవితాన్ని ధర్మానికి, దైవానికి అంకితం చేయాలన్న వైరాగ్యంతోనే తప్ప లౌకిక లంపటాల్లో మునిగి తేలాలని కాదు. గాంధీగారి స్ఫూర్తితో సత్యాగ్రహ ప్రతిజ్ఞ చేసి, ఢిల్లీ హర్తాళ్‌లో చురుకుగా పాల్గొన్నప్పుడూ ఆయనకు ఏ రాజకీయ సంస్థలోనూ ఏ బాధ్యతా లేదు. మోతీలాల్ నెహ్రూ, మదన్‌మోహన్ మాలవీయ వంటి కాంగ్రెసు అగ్రనాయకులు ఆయనను ముఖ్య విషయాలలో సంప్రదించింది కూడా వ్యక్తిగత హోదాలోనే; ఆయన విశిష్ట వ్యక్తిత్వాన్ని గౌరవించే! ఆ ఏటి కాంగ్రెసు మహాసభలను అమృత్‌సర్‌లోనే జరిపి తీరాలని స్వామీజీ పట్టుబట్టింది దేశ ప్రయోజనాల దృష్టితోనే. పైవాళ్లు ఒప్పుకుంటే స్థానికులను ఉత్సాహపరచి, తానూ వెనక ఉండి చేయగలిగిన సాయం చేయవచ్చునన్న ఉద్దేశంతోటే.

అలాంటిది – ఆలిండియా కాంగ్రెసు మహాసభల ఆహ్వాన సంఘానికి అధ్యక్షుడిగా ఉండటమంటే కాంగ్రెసులోకి రాజకీయాల లోకి నేరుగా ప్రవేశించినట్టే. ఆ రకమైన లంపటం ఒక సన్యాసికి, అతడు ఎంచుకున్న అధ్యాత్మిక మార్గానికి ప్రతిబంధకం కాదా? అలాగని – బాధ్యత తీసుకోకుండా తానూ చేతులెత్తేస్తే మొత్తం జతీయోద్యమవే నీరుకారిపోదా? జాతి ప్రయోజనాలు దెబ్బతినవా? వాటిని పట్టించుకోవలసిన విధి సన్యాసికి ఉండదా? మరి ఏమి చేయాలి?

ఎటూ తేల్చుకోలేక గుంజాటన పడుతున్న స్థితిలో ఎవరిని సలహా అడగాలా అని ఆలోచిస్తే శ్రద్ధానందకు గాంధీగారు గుర్తుకొచ్చారు. చక్కగా నడుస్తున్న సత్యాగ్రహాన్ని ఉన్నట్టుండి ఆపేయడాన్ని తీవ్రంగా వ్యతిరేకించి, సత్యాగ్రహన్ని సభకు రాజీనామా చేసినా మహాత్ముడంటే స్వామికి ఎనలేని గౌరవభావం ఉంది. 'ఇదీ పరిస్థితి. నన్ను ఏమి చేయమంటారు?' అని ఆయన జాబు రాయగానే గాంధీజీ నుంచి జవాబు వచ్చింది. 'ధర్మం కోసం చేసే అధ్యాత్మిక సాధనలో ఇదీ ఒక భాగం అనుకుని రిసెప్షన్ కమిటీ ఛైర్మన్ బాధ్యత తప్పక స్వీకరించండి' అని.

సరిగ్గా అదే సమయంలో అమృత్‌సర్‌లో మార్షల్ లా కోర్టులు మరణశిక్షనో, ద్వీపాంతర వాస శిక్షనో విధించిన జాతీయవాదుల భార్యలు కలిసి గుంపుగా స్వామీజీ దగ్గరికి వచ్చారు. 'మా భర్తలు దేశంకోసం జీవితాలను అర్పించారు. వారి గురించి మాకు చింతలేదు. కాని వారు ఏ లక్ష్యం కోసం బలిపీఠమెక్కారో అది నెరవేరాలంటే మీరు దగ్గరుండి జాతీయ మహాసభలను జరిపించటం అవసరం. దయచేసి అంగీకరించండి' అని ఆ వీర వనితలు కోరారు. మార్షల్ లా కోర్టులో నిష్కారణంగా ఉరిశిక్ష పడిన కొందరు జాతీయవాదులు తమ శిక్షను తగ్గించమని ప్రభుత్వానికి అర్జీ పెట్టి ప్రార్థించటానికైతే నిరాకరించారు. మా ప్రాణం పోయినా ఫరవాలేదు. స్వామీజీని మాత్రం ఈ ఊళ్లోనే తెల్లవాళ్లు తెల్లబోయేంత ఘనంగా కాంగ్రెసు సభలను జరిపించమనండి. అదే మా చివరి కోరిక – అని వారు కబురు పంపారు.

దాంతో స్వామి స్థిర నిర్ణయానికి వచ్చాడు. కాంగ్రెసులో ప్రాథమిక సభ్యుడు కూడా కాకుండానే కాంగ్రెసు జాతీయ మహాసభలకు ఆహ్వాన సంఘ అధ్యక్షుడయ్యాడు. అక్కడితో అయిపోలేదు. సమస్యలు అప్పుడే మొదలయ్యాయి.

ఊరి బావిలో పంచములు చేద వేయటానికి వీలు లేదు. పై కులాలవారు వాడే పాత్రలను, గ్లాసులను తాకితే తప్పు. వారి సరసన కూచోబోతే నేరం. వారి పిల్లలు చదివే పాఠశాలల్లో అస్పృశ్యుల పిల్లలకు అనుమతి లేదు. వీరి గాలి సోకితేనే మైల పడినట్టు వారు గంగవెర్రులెత్తుతారు.

మహాసభలకు బెంగాల్, మద్రాస్, బొంబాయి ప్రెసిడెన్సీల నుంచి వేల మంది ప్రతినిధులు రానున్నారు. ఎముకలు కొరికే ఉత్తరాది చలిలో వారు గుడారాల్లో వీండలేరు. వారి బసకు పక్కా భవనాలు తప్పనిసరి. ఊళ్లో అఖాడాలు, ధర్మశాలలు, పాఠశాలలు చాలానే ఉన్నాయి. కాని ఎవరిని అడిగినా కాంగ్రెస్ డెలిగేట్ల బసకు చోటు ఇచ్చేందుకు నిరాకరించారు. సానుభూతి లేక కాదు. జాతీయ వాదులకు అశ్రయమిస్తే తెల్ల రాకాసులు ఎక్కడ తమను కాల్చుకు తింటారోనని వారి భయం. దాంతో ఊరి బయట మహాసభల కోసం మాట్లాడుకున్న వ్యవసాయ భూమి అవరణలోనే డెలిగేట్ల బసకూ ఏర్పాట్లు చేయాలని తలపెట్టారు. కంట్రాక్టరు ఇరవై రోజుల ముందే పని మొదలెట్టాడు. వారంరోజులు పని నడిచిందో లేదో కుండపోతగా వాన. తీసిన గోతులన్నీ వర్షపు నీటితో నిండిపోయాయి. మోటార్లను తెచ్చి నీరు తోడిపోయించగానే మళ్లీ జడివాన.

నానా తిప్పలు పడి గుడారాలు, వేదికలు, వంటశాలలు బసకు ఏర్పాట్లు చేసేసరికి తాతలు దిగొచ్చారు. స్పెషల్ రైళ్లలో డెలిగేట్లు రావటం మొదలెట్టి, విడిదిలో సామాన్లు సర్దుకున్నారో లేదో మళ్లీ ఆకాశం చిల్లులు పడ్డట్టు కుంభవృష్టి. గుడారాల నిండా మోకాళ్ల లోతునీళ్లు. అప్పటికప్పుడు ఇంతమందినీ ఎక్కడికి తరలించాలి? మరి కొన్ని గంటల్లో రాబోతున్న రైళ్లలో దిగబోతున్న ఇంకొన్ని వేల మందిని ఎక్కడ తలదాచుకోమనాలి?

అది ఊహించని ఉపద్రవం. గట్టెక్కడం ఎలాగో దిక్కుతోచక స్వామీజీ తబ్బిబ్బు అవుతున్న సమయాన అమృత్‌సర్ పౌరులు అద్భుతంగా స్పందించారు. వానలో తడిసి ముద్దయి కారులో స్వామి పట్నంలోకి బయలుదేరబోతుండగా దేవుడు పంపినట్టు ఓ పెద్ద మనిషి ఆయనను ఆపి, 'మా ఇంట్లో యాభై మందిని ఉంచుకోగలను. నాలాగా బయటి డెలిగేట్లకు ఆతిథ్యం ఇవ్వటానికి తీంకా చాలామంది సిద్ధంగా ఉన్నారు' అని చెప్పాడు. 'అంతకంటేనా?'న్తీ ధన్యవాదాలు చెప్పి వెంటనే అగంతకుడి వెంట వీలైనంత మంది ప్రతినిధులను స్వామి పంపించాడు. ఊళ్లోకి వెళ్లి వీధులన్నీ తిరిగి, ముందుకొచ్చిన వారినల్లా సభా ప్రాంగణానికి ఉరికించి,

మేనేజరు ఉపాధ్యాయులను బలవంత పెట్టి మర్నాడు దళిత విద్యార్థులనూ అందరి తోబాటు క్లాసులో కూచోబెట్టించాడు. ఏం లాభం? మధ్యాహ్నానికల్లా సగం మంది పిల్లలు ఏదో మిష మీద క్లాసు ఎగ్గొట్టారు. మరసటి రోజు బెంచీలన్నీ ఖాళీ. హెడ్మాస్టరు, ఒక ఉపాధ్యాయుడు మినహా అధ్యాపక సిబ్బందీ జాడ లేరు.

టాంగాలను, మోటారు వాహనాలను దొరికిన కాడికి సమీకరించి డెలిగేట్లకు హుటాహుటిన ఇళ్లలో ఆశ్రయం కల్పించాడు.

ఈ ఘటనా క్రమాన్నిబట్టే అమృత్‌సర్ వాసులు కాంగ్రెసు మహాసభలకు ఎంత ప్రాధాన్యం ఇచ్చారో తెలుస్తుంది. తమకు పడ్డ శిక్షలను తగ్గించుకోవటం కంటే మహాసభలు అనుకున్న ప్రకారం జరగటం ముఖ్యమని ఖైదీలు తలచారంటేనే... తెల్ల సర్కారు తమపై ఆగ్రహిస్తుందని తెలిసి కూడా వేలాది డెలిగేట్లను రాత్రికి రాత్రి స్థానిక ప్రజలు తమ ఇళ్లలో పెట్టుకున్నారంటేనే పంజాబ్‌లో ఘోర దురంతాలకు గురి అయిన సాధారణ ప్రజలు కాంగ్రెసు మీద, దాన్ని నడిపించే మహాత్ముడి మీద ఎన్ని ఆశలు పెట్టుకున్నారో అర్థమవుతుంది.

తీరా జరిగిందేమిటి? హంటర్ కమిషను విచారణలో ప్రజల పక్షాన కాంగ్రెసు పాల్గొనరాదన్న తన మాటను కాంగ్రెసు నాయకులు మన్నించలేదని అలిగి గాంధీగారు అమృత్‌సర్ కాంగ్రెసు సభల్లో అడుగుపెట్టను పొమ్మని మొండికేశారు. ఆయన అన్నదాని కల్లా తల ఊచి, ప్రసన్నం చేసుకోవడానికి కాంగ్రెసు నేతలు నానాపాట్లు పడ్డారు. ఆ తరవాతైనా పంజాబ్‌లో అమానుష హత్యాకాండను, ప్రజలపై సర్కారీ ఘాతుకాలను ఖండించటానికి అఖిల భారత కాంగ్రెసు మహాసభకు గొంతు పెగలలేదు. అంతకు ముందు సంవత్సరం బొంబాయి. ఢిల్లీ సభల్లో మాంటేగు – చెమ్స్‌ఫర్డ్ బూటకపు సంస్కరణలను కాంగ్రెసు సంస్థ నిష్కర్షగా ఖండించింది. అమృత్‌సర్ సభల నాటికి ఆ సంస్కరణలకు కర్కశమైన చట్టరూపం కూడా సిద్ధించింది. అప్పటిదాకా అనుసరిస్తున్న కాంగ్రెసు విధానం ప్రకారమే సంస్కరణ శాసనాన్ని గర్హిస్తూ దేశబంధు చిత్తరంజన్‌దాస్ తీర్మానం ప్రవేశపెడితే మహాత్ముడు అది ససేమిరా కుదరదన్నాడు. బ్రిటిషు సర్కారు వారి నిజాయితీకి, ప్రజలకు మేలు చేయాలన్న చిత్తశుద్ధికి ఆ చట్టం గొప్ప నిదర్శనమని వాదించి, తన పలుకుబడినంతా వెచ్చించి, కాంగ్రెసు చేత శీర్షాసనం వేయించి, ప్రజాకంటక దుష్ట ప్రభుత్వానికి స్నేహహస్తం అందింపజేశాడు.

తమ మీద ప్రజలు పెట్టుకున్న గంపెడాశలను ఇంత గొప్పగా నీరుగార్చారు. ప్రజాపక్షాన నిలిచి బ్రిటిషు ప్రభుత్వ రాక్షసత్వాన్ని ఎదిరించడానికి చేతులు రాలేదు. సరే ! ఆహ్వాన సంఘం అధ్యక్షుడి స్వాగతోపన్యాసంలో శ్రద్ధానంద నొక్కి చెప్పిన దళిత జనోద్ధరణకైనా బాపూజీ సహకరించాడా? కాంగ్రెసు మహా సంస్థ కలిసి వచ్చిందా?

బార్డోలీ బండారం

స్వతంత్ర భారత రాజ్యాంగం అమల్లోకి వచ్చి 65 ఏళ్లు దాటినా నేటికీ అంటరానితనం పూర్తిగా మటుమాయమైందని చెప్పడానికి వీల్లేదు. దేశంలో ఏదో ఒక మూల దళితులపై ఏదో ఒక విధంగా దారుణ కుల వివక్ష అడపాదడపా మోర చాస్తూనే ఉంది. రాజ్యాంగ రక్షణలు, చట్టపరమైన కట్టుదిట్టాలు ఉంటేనే ఇలా ఉన్నప్పుడు, అనేవీ లేని కాలంలో పరిస్థితి ఎలా ఉండేదో ఊహించవచ్చు.

ఊరి బావిలో పంచములు చేద వేయటానికి వీలు లేదు. పై కులాలవారు వాడే పాత్రలను, గ్లాసులను తాకితే తప్పు. వారి సరసన కూచోబోతే నేరం. వారి పిల్లలు చదివే పాఠశాలల్లో అస్పృశ్యుల పిల్లలకు అనుమతి లేదు. వీరి గాలి సోకితేనే మైల పడినట్టు వారు గంగవెర్రులెత్తుతారు.

మానవత్వాన్ని మంటగలిపే అంటరానితనమంటో శ్రద్ధానందకు మొదటి నుంచి వొళ్లు మంట. స్వామి దయానంద సరస్వతి చూపిన దారిలో తోటి ఆర్య సామాజికులతోబాటు ఆయన ఆ దురాచారానికి వ్యతిరేకంగా చిరకాలం నుంచీ పోరాడుతున్నాడు. అమృత్‌సర్ కాంగ్రెస్ ఆహ్వాన సంఘ అధ్యక్షుడిగా ఇచ్చిన స్వాగతోపన్యాసంలో చాలామందికి రుచించదని తెలిసి కూడా అస్పృశ్యతపై తీవ్రస్థాయిలో ధ్వజమెత్తాడు. గాంధీ మహాత్ముడు సైతం ఆ సామాజిక చెడుగును గట్టిగా గర్హించి, అస్పృశ్యతను పాటించేవారికి, సమర్థించే వారికి సత్యాగ్రహంలో పాల్గొనే అర్హత ఉండదని ప్రకటించాక కనీసం కాంగ్రెసు వాదుల వైఖరిలో మంచి మార్పు వస్తుందని ఆయన ఆశించాడు. జాతీయోద్యమానికి చోదకశక్తి అయిన కాంగ్రెస్ మహా సంస్థే నడుము బిగించినపుడు, దాని సహాయ సహకారాలతో దళితులకు సామాజిక న్యాయాన్ని సాధించటం సుకరమవుతుందని విశ్వసించాడు. అది ఒట్టి భ్రమ అని కొద్దికాలానికే తెలుసుకున్నాడు... ఎరీక ఆశాభంగాల తరవాత.

తాను చెప్పినట్టు చేస్తే చాలు సంవత్సరం తరక్కుండా స్వరాజ్యం ఉరుకుకుంటూ వచ్చి ఒళ్లో వాలుతుందని మహాత్ముడు పెట్టిన గడవీవు మరో నాలుగు నెలల్లో ముగుస్తుందనగా... అస్పృశ్యత నిర్మూలన కార్యక్రమానికి అత్యవసరంగా కావలసి వచ్చిన నిధులను ఢిల్లీ కాంగ్రెసు కమిటీ వారిని అడిగి పుచ్చుకునే ఉద్దేశంతో 1921 ఆగష్టులో స్వామి శ్రద్ధానంద చాలాకాలం తరవాత ఢిల్లీకి తిరిగి వెళ్లాడు. అక్కడి పరిస్థితి చూసి తెల్లబోయాడు.

రెండేళ్ల కింద రౌలత్ బిల్లులకు వ్యతిరేకంగా ఆయన నడిపిన సత్యాగ్రహంలో ఉత్సాహంగా దళితులు ఇప్పుడు కాంగ్రెసు పేరు చెబితేనే మండిపడుతున్నారు. అప్పట్లో హిందూ – ముస్లిం ఐక్యతను మనసారా బలపరచిన పంచములే ఇప్పుడు హిందూ కుల వర్గాలన్నా, మహమ్మదీయులన్నా భగభగలాడుతున్నారు. ఎందుకిలా అని శ్రద్ధానంద ఢిల్లీ, ఆగ్రా చమార్ కుల పెద్దలను పిలిచి వాకబు చేశారు. వారి చెప్పింది ఇది:

ఢిల్లీ కాంగ్రెసు కమిటీ కార్యదర్శి ఈ మధ్య వాళ్లను పిలిపించాడట. మీ వాళ్లందరిచేతా నాలుగణాల చందా కట్టించి కాంగ్రెసులో చేర్పించండి – అన్నాడట. 'ముందు మా సమస్యలు తీర్చండి. మమ్మల్ని బావుల్లో నీళ్లు తోడుకోనివ్వటం లేదు. మమ్మల్ని మనుషుల్లా చూడటమే లేదు. ఆ సంగతి తేలకుండా మేము మీ వెంట రాలేము' అని దళిత పెద్దలు అన్నారట. 'ముందు స్వరాజ్యం రానివ్వండి. ఆ తర్వాత మీ సమస్యలు ఆలోచిస్తాం' అని నేతాశ్రీలు చెప్పారట. 'శతాబ్దాలుగా మేము పడుతున్న అగచాట్లనేమో మీరు పట్టించుకోరు. స్వరాజ్యం లడ్డూ మాత్రం వెంటనే మీ నోట్లో పడాలా? ఏమి మాట్లాడుతున్నారయ్యా మీరు?' అని వీరు మొగం మీదే దులిపేసి, అప్పటి నుంచి కాంగ్రెసుకు దూరంగా ఉంటున్నారట.

అంతా తనకు తెలిసిన వాళ్లే కనుక శ్రద్ధానంద వెంటనే స్థానిక కాంగ్రెసు నాయకులను పిలిచి మాట్లాడాడు. 'స్వరాజ్యం కంటే అస్పృశ్యత నిర్మూలన ముఖ్యం అని గాంధీగారే చెబుతున్నప్పుడు స్వరాజ్యం

వచ్చేదాకా అంటరానితనాన్ని పట్టించుకోము అని మీరెలా అన్నారు - అని గట్టిగా నిలదీశాడు. ఆయన మీద గౌరవంతో హిందూ కులీనులు కాస్త మెత్తబడ్డారు. కాని ముస్లిం నాయకులు ససేమిరా కుదరదని మొండికేశారు. వారికి ఏ విధంగానూ నచ్చచెప్పలేక విసిగి, చివరికి మహాత్ముడికే (1921 సెప్టెంబరు 9న) స్వామి ఇలా ఉత్తరం రాశాడు:

"ఢిల్లీ ప్రదేశ్ కాంగ్రెసు కమిటీ నుంచి అస్పృశ్యత నివారణ కార్యాలకు ధన సహాయం పొందలిచినట్టు మీకు లాహోర్ నుంచి నేను తంతి ఇచ్చాను. కాని ఇక్కడికి వచ్చి చూశాక కాంగ్రెసు ద్వారా దళిత జనోద్ధరణ అయ్యే పనికాదు అనిపించింది.

"ఢిల్లీ, ఆగ్రా చమార్‌లు కోరేదల్లా ఒక్కటే. హిందువులు, ముసల్మాన్లు వాడుకునే బావుల నుంచి వారినీ నీరు తోడుకోనివ్వాలి. ఆకుల్లో, దొనెల్లో కాకుండా అందరిలాగే వారినీ చలివేంద్రాల్లో, హోటళ్లలో మామూలుగా నీళ్లు తాగినివ్వాలి. ఈ మాత్రం కూడా కాంగ్రెసు కమిటీకి శక్తికి మించిన పని అయింది. ఉమ్మడి బావులను దళితులు ఉపయోగించుకోవడానికి ఒకవేళ హిందువులు సరే అన్నా తాము మాత్రం బలవంతంగానైనా వారిని అడ్డగిస్తామని మహమ్మదీయులు తెగేసి చెబుతున్నారు. ఎందువల్ల-అంటే చమార్లు చచ్చిన గొడ్ల మాంసం తింటారు కనుక - అని అంటున్నారు.

"ఈ చమార్లలో ఏ రకమైన మాంసం తిననివాళ్లు వేల సంఖ్యలో ఉన్నారు. కొద్దిమంది చచ్చిన పశువుల మాంసం తింటున్న మాట నిజమే. వారి చేత కూడా ఈ చండాలపు అలవాటును మాన్పించటానికి ఆర్య సమాజికులు ప్రయత్నిస్తున్నారు. అయినా - ణాకు తెలియక అడుగుతాను. హిందువులు, ముస్లింలు మాత్రం పశువులు బతికుండగానే వాటి మాంసంతింటున్నారా? మరణించిన పశువుల మాంసాన్ని వారు మాత్రం ఆరగించటం లేదా?

"12 నెలల్లో స్వరాజ్యాం రావటానికి నాగపూర్‌లో మీరు పెట్టిన షరతుల్లో దళిత వర్గాలకు సమాన హక్కులు ఇవ్వాలన్నదీ ఒకటి కదా? మరి మనవాళ్లు చేస్తున్న దేమిటి? ఆరున్నర కోట్ల మంది అంటరాని సోదరులను మనతో కలుపుకోకుండా సాధించే స్వరాజ్యం భారత జాతికి ఎటువంటి గర్వకారణమో నాకు బోధపడటం లేదు. ఈ పరిస్థితుల్లో కాంగరెసు కమిటీ నుంచి ధన సహాయం నేను ఆపేక్షించలేను. నాకు ఉన్నంతలోనే నా చేతనైన దానిని నేను చేయదలిచాను"

[*Inside Congress, Swami Shraddhanand,* pp.134-135]

ఈ ఉత్తరం రాసిన రెండు నెలలకు (1921 నవంబర్ 3,4 తేదీల్లో) ఢిల్లీలో ఎ.ఐ.సి.సి. కొలువు తీరింది. సామూహిక శాసనోల్లంఘన ఉద్యమం చేపట్టటానికి నిర్దిష్ట నిబంధనలను రూపొందించింది. ఉద్యమానికి ఎంచుకున్న ప్రాంతంలో అస్పృశ్యతను నూటికి నూరుపాళ్లు నిర్మాలించాలన్నది వాటిలో ముఖ్యమైనది. ఆ మహాసభలో శ్రద్ధానంద కూడా వేదిక మీద ఉన్నాడు. "పోనీలే! ఇప్పటికైనా కాంగ్రెసు అస్పృశ్యత నిర్మూనకు అత్యధిక ప్రాముఖ్యం ఇస్తూ విధాన నిర్ణయం చేసింది. మన ఉత్తరం ప్రభావంవల్లే కావచ్చు గాంధీజీ పట్టుబట్టి కాంరగెసు చేత ఈ తీర్మానం చేయించాడు. ఇకనైనా పరిస్థితి బాగుపడుతుందేమో! కాంగ్రెసు వారి వైఖరి మారుతుందేమో చూద్దాం" అనుకున్నాడు.

ఢిల్లీ ఏఐసిసిలో మహాత్ముడు ఇంకో కట్టడి కూడా చేశాడు. అంతా మీ మీద వదిలేస్తే మీరు ఏమి చేస్తారో ఏమో! సత్యాగ్రహ విద్య నా ఒక్కడికే బాగా తెలుసాయె! అందుకని నన్ను చూసి నేర్చుకోండి. సత్యాగ్రహానికి ప్రయోగశాలలా ముందు నేను బార్డోలీ తాలూకాను తయారుచేస్తాను. నేను దగ్గరుండి అన్ని నియమాలూ, నిబంధనలూ కచ్చితంగా అమలు జరిపించి... కాంగ్రెసు వారికి స్వయంగా తర్ఫీదు ఇచ్చి వంక లేని విధంగా సత్యాగ్రహం నడిపిస్తాను; ఉన్నపళంగా స్వరాజ్యాం సాధిస్తాను-అని అనుచరులకు బోధించాడు.

సత్యాగ్రహ శాస్త్రకారుడే స్వయానా బరిలోకి దిగి శ్రేణులను నడిపిస్తే అంతకంటే కావలసింది ఏముంది? కార్యక్షేత్రంగా ఆయన ఎంచుకున్న బార్డోలీ తాలూకాలో అయినా సత్యాగ్రహానికి ముందస్తు షరతుగా అంటరానితనం నూటికి నూరు శాతం నిర్మూలన అయితే దళిత జనోద్ధరణ దిశలో పెద్ద అడుగు ముందుకు పడినట్టేకదా? - అని శ్రద్ధానంద లాంటి జాతీయ వాదులు సంతోషించారు.

గాంధీగారు ప్రత్యేక శ్రద్ధ పెట్టి, అన్నీ తాను దగ్గరుండి చూసుకుంటూ అస్పృశ్యత నూరు శాతం నిర్మూలన లాంటి షరతులను జయప్రదంగా నెరవేర్చి, చారిత్రాత్మక సత్యాగ్రహానికి బార్డోలీ తాలూకాను సర్వసన్నద్ధం చేస్తున్నారంటూ ప్రచార సాధనాలు తాషామర్పాలు వోగినస్తా దేశమంతటా అమితాసక్తిని రేకెత్తిస్తున్న సమయంలో అదే పుణ్యస్థలిలో అడుగుపెట్టే భాగ్యం శ్రద్ధానందకు కలిగింది. ఆ ప్రాంతంలో ఒక ప్రైవేటు స్కూలు ఉంది. నిర్వాహకులు దాని గురుకుల పాఠశాలగా మార్చి అభివృద్ధి చేయాలనుకున్నారు. గురుకుల విద్యాసంస్థల స్థాపనకు ఆధునిక కాలంలో ఆద్యుడనదగ్గ స్వామి శ్రద్ధానందను ప్రారంభోత్సవానికి సాదరంగా ఆహ్వానించారు. ఆయన వెళ్లాడు. తరవాత ఏమైందీ ఆయనే చెబుతాడు వినండి:

"టాంగాలో నేను అక్కడికి వెళ్లేసరికే మహాత్మాగాంధీగారి నమ్మినబంట్లు పాఠశాలను గురుకులంగా మార్చనీయవద్దని యాజమాన్యం మీద గట్టి ఒత్తిడి తెచ్చారు. పేరుకు జాతీయ పాఠశాలే. అయినా మామూలు గవర్నమెంటు స్కూళ్లకూ, దానికీ బోధనాంశాల్లో గాని, క్రమశిక్షణలో గానీ తేడా లేదు. అక్కడ చేరిన జనాన్ని ఉద్దేశించి మాట్లాడమని నన్ను కోరారు.

ఆ స్కూల్లో పిల్లలకి భోజనం కూడా పెడతారు. పాఠశాలలోకీ, భోజనశాలలోకీ 'అస్పృశ్యులు' అనబడేవాళ్లను రానిస్తున్నారా - అని నేను అడిగాను. అక్కడివారు నీళ్ల నమిలారు. భోజనశాలలోకి ఏ అస్పృశ్యుడినీ అడుగే పెట్టనివ్వరట. పాఠశాలలో చదువుకోవడానికైతే ముగ్గురు అస్పృశ్యులు వస్తున్నారట. కాని వారు బయట వరండాలో కూచోవలసిందే తప్ప మిగతా విద్యార్థులతో కలిసి తరగతి గదిలో కూచోనివ్వరట.

నా ఉపన్యాసంలో నేను పాఠశాల యాజమాన్యాన్ని చడామడా కడిగేశాను. జాతికి చెందిన ప్రతి పిల్లవాడికీ స్వేచ్ఛగా ప్రవేశం కల్పించలేనప్పుడు మీది 'జాతీయ' పాఠశాల అని చెప్పుకోకండి అని మందలించాను. నా మాటలు బాగానే

పనిచేశాయి. మేనేజరు ఉపాధ్యాయులను బలవంతపెట్టి మర్నాడు దళిత విద్యార్థులనూ అందరితోబాటు క్లాసులో కూచోబెట్టించాడు. ఏం లాభం? మధ్యాహ్నానికల్లా సగం మంది పిల్లలు ఏదో మిష మీద క్లాసు ఎగ్గొట్టారు. మరుసటి రోజు బెంచీలన్నీ ఖాళీ. హెడ్మాస్టరు, ఒక ఉపాధ్యాయుడు మినహా అధ్యాపక సిబ్బంది జాడ లేరు. బార్డోలీ సత్యార్గహం దారి సత్యాగ్రహానిదే. ఈ స్కూలు దారి స్కూలుదే. అందరు విద్యార్థులలాగే దళితుల పిల్లలనూ సమానంగా ఎందుకు చూడరని అడిగిన నాథుడు లేడు.

అక్కడి నుంచి నేను బార్డోలీకి వెళ్లాను. ఎక్కడ చూసినా ఖద్దరు అయితే బాగానే కనిపించింది. కాని అస్పృశ్యత నివారణ అంతంతమాత్రమే. నేను ప్రసంగించిన సభకు ఇతరులతో బాటు కొందరు అంటరానివాళ్లూ హాజరయ్యారు. నాకు ఆతిథ్యం ఇచ్చిన గృహస్థు కుటుంబీకులు మీటింగు నుంచి ఇంటికి వెళ్లీ వెళ్లగానే కట్టుబట్టలతో సచేల స్నానం చేశారు.

[*Inside Congress, Swami Shraddhanand*]

ఇదీ గాంధీగారి సొంత ప్రయోగశాలలో అయనకు ప్రియాతిప్రియమైన హరిజనుల ప్రారబ్ధం. ఇది ఏ ఒక్క ఊళ్లోనో పొడసూపిన వైపరీత్యం కాదు. ఇంచుమించుగా దేశమంతటా కొంచెం హెచ్చుతగ్గుల్లో ఇదే పరిస్థితి.

మన పెదనందిపాడులో పన్నుల సత్యార్గహాన్ని కాంగ్రెసు నిర్దేశించిన షరతులకు కట్టుబడి ఆంధ్ర నాయకులు మొదలెట్టినప్పుడు ఏమైందో **'మన మహాత్ముడు'** గ్రంథంలో చూశాము కదా? అస్పృశ్యత నిర్మూలన, ఖద్దరు ధారణ వంటి కండిషన్లను నెరవేర్చటానికి మనవారు కాలికి బలపం కట్టుకుని ఊరూరా తిరిగి ఎంత ప్రయాసపడ్డా గాంధీగారు కడదాకా సణుగుతూనే ఉన్నారు. మీ దగ్గర అస్పృశ్యత ఇంకా నూటికి నూరుపాళ్లు పోయినట్టు లేదని నాకు అనుమానం – అంటూ తడవకో అడ్డుపుల్ల వేస్తూనే ఉన్నాడు. ఆ మహానుభావుడే నేరుగా బాధ్యత తీసుకుని, తీర్చిదిద్దానన్న బార్డోలీలోనేమో ఇదీ హరిజనుల స్థితి!

దేశానికే మోడల్ లేబరెటరీలా మహాత్ముడు చూపెట్టిన బార్డోలీలో ఆర్భాటమే తప్ప అసలు సత్యార్గహం మొదలే లేబరెటరీలా మహాత్ముడు చూపెట్టిన బార్డోలీలో ఆర్భాటమే తప్ప అసలు సత్యాగ్రహం మొదలే కాలేదు. ఎప్పుడెప్పు డంటూ దేశమంతటి నుంచీ ఒత్తిడి వచ్చాక తప్ప విసరయి 1921 డిసెంబరులో అహమ్మదాబాదు కాంగ్రెసులో శాసనోల్లంఘన మహా ఉద్యమానికి పచ్చజెండా గొప్పగా ఊపారు. పోరాటాన్ని ఎలా, ఎక్కడ, ఏ స్థాయిలో మొదలెట్టి ఎలా నడిపించాలన్న దానికి సంబంధించి సర్వాధికారాలనూ గాంధీజీకి ఇచ్చి కాంగ్రెసు సంస్థ చేతులు కడిగేసుకుంది. బార్డోలీ తాలూకాలో తన పర్యవేక్షణలో సహాయ నిరాకరణ మొదల వడమే తడవుగా భూకంపం వస్తుందని, రాజకీయ వ్యవస్థలో పెద్ద ఉత్పాతం లేచి, ప్రభుత్వమనేది స్తంభించి పోతుందనీ.. పోలీసుస్టేషన్లు, కోర్టులు, ఆఫీసులు అన్నీ ప్రజల చేతుల్లోకి వెళతాయనీ మహాత్ముడు బ్రహ్మాండమైన బిల్డప్ ఇచ్చాడు.

నిజంగా అంతటి ప్రజావిప్లవమే వస్తే ఏదో ఒక స్థాయిలో హింస అనివార్యం. ఆ సంగతి మెడ మీద తల ఉన్న ప్రతివాడికీ తెలుసు. కానీ కాంగ్రెస్ నియంత గాంధీ మాత్రం ప్రభుత్వం ఎంత రెచ్చగొట్టినప్పటికీ ప్రజల నుంచి ఇసుమంత హించ తలెత్తినా ఉద్యమం ఆపేస్తానని ముందే బెదిరించాడు. విదేశీ పాలనపై ప్రజల ఆగ్రహం కట్టలు తెంచుకున్న ఉద్రిక్త స్థితిలో యు.పి.లో గోరఖ్‌పూర్ దగ్గర చౌరీచౌరాలో 1922 ఫిబ్రవరి 4న అల్లరి మూకలు పోలీసు స్టేషనుకు నిప్పుపెట్టి 11 మంది పోలీసులను సజీవ దహనం చేశారు. అంతే! హింస జరిగింది కాబట్టి బార్డోలీ సత్యాగ్రహం జరగదు. మొత్తం సహాయ నిరాకరణ ఉద్యమాన్నీ ఇదిగో ఈ క్షణమే ఆపేస్తున్నానని మహాత్ముడు పిడుగులాంటి ప్రకటన చేశాడు.

బార్డోలీ మహా విప్లవం అలా పుట్టకుండానే గిట్టింది? మరి అస్పృశ్యత నిర్మూలనో? అది ఇంకో కథ.

ఆరోగ్య సూక్తులు

– సంగమేశ్వర్ "సంగమ్" కవి.

తే॥ ఆకుకూరలు పండ్లను అధికముగను
నీరు చాలగా త్రాగాలి నెమ్మదిగను;
తిండి రాత్రుల యందున మెండుగాను–
తినని వారికారోగ్యంబు ఘనము గబ్బు.

ఆ॥ పగలు వుదయమరటిపండు "బంగారము"
తీరు మేలుఁజేయు తినగవలెను;
రాత్రిపూట గట్టి రామిగా కీడిడు
కనకరాసులిడిన తినగవలదు!

– పగటి పూట నిదుర; పడుచు వారలు రాత్రి
మేలు కొనుచునుండ మేలుగాదు;
పండు ముసలి వారు, పసిపిల్లలకు మేలు
కలుగజేయగలదు ఘనము గాను.

ఆ॥ పాలు పెరుగు వెన్న ఫలములన్నింటిని
తినిన కలుగు మేలు ఘనముగాను,
కల్లు సారమత్తు కలించు వాటిని
కలల గూడ చూడవలదు జనులు.

– వేడిగాను కాళ్ళు; కడుపు మెత్తగాను
మెదడు చల్లగాను ముదము తోడ
మెదలు వారికేల మేధిని మందులు?
అవసరంబులేదు ఆర్యులనిరి!

आर्य समाज बिचकुन्दा के नए भवन का उद्‌घाटन

सांसद बी.बी. पाटिल जी ने आर्य समाज बिचकुन्दा के नए भवन का उद्‌घाटन किया । महायज्ञ में आहुति देकर सभा प्रधान श्री विट्ठल राव जी आर्य एवं अन्य अधिकारियों के साथ पौधा लगाया । स्वामि ब्रह्मानन्दजी ने भी इस अवसर पर पौधा लगाया ।

१०० वर्ष प्राचीन सिकन्दराबाद की बोलारम् आर्य समाज में श्रावणी पर महायज्ञ का आयोजन कर पौधा लगवाया।
पौधा लगाते हुए डॉ. टी.वी. नारायणजी सभा उपप्रधान, पौधा लगाते हुए श्री आचार्य आनन्दप्रकाश जी
पौधा लगाते श्री आचार्य भवभूतिजी एवं आचार्या नीरजा देवी तथा आर्य समाज के अधिकारीगण एवं प्रमुख कार्यकर्ता।

सभा में आचार्य आनन्द प्रकाश द्वारा रचित संस्कृत शब्द संपदा का लोकार्पण किया गया।

నమస్తే బాన్సువాడ

శుక్రవారం 11 సెప్టెంబర్ 2015

तेलंगाना राज्य के कृषि मंत्री श्री पोचारम श्रीनिवास रेड्डी जी ने बान्सवाड़ा आर्य समाज द्वारा आयोजित श्रावण महायज्ञ में भाग लिया वर्षा के लिए उसकी महत्ता को दर्शाया तथा सभा प्रधान व अन्य अधिकारियों के साथ मिलकर पौधा लगाया। श्री धर्मवीरजी इंजीनियर पौधा लगाते हुए अन्य अधिकारियों के साथ चित्र में देखे जा सकते है।

महिलाएं श्रद्धा से पौधा लगाते हुए

యజ్ఞంతో వాతావరణం శుద్ధి : మంత్రి

బాన్సువాడ పట్టణం, న్యూస్‌టుడే: మంత్రోపదేశంతో నిర్వహించే యజ్ఞ యాగాదుల వల్ల వర్షాలు కురుస్తాయని వ్యవసాయ శాఖ మంత్రి పోచారం శ్రీనివాస్‌రెడ్డి పేర్కొన్నారు. గురువారం బాన్సువాడ పట్టణంలోని ఆర్యసమాజ్ మందిరంలో నిర్వహిస్తున్న శ్రావణవేద ప్రచార సప్తాహ కార్యక్రమంలో పాల్గొన్నారు. యజ్ఞంలో పాల్గొని ప్రత్యేక పూజలు నిర్వహించారు. బాన్సువాడ ఆర్యసమాజ్ ఆధ్వర్యంలో యజ్ఞ కార్యక్రమం నిర్వహిస్తుండ వల్లే వర్షాలు కురుస్తున్నాయని విశ్వసిస్తున్నట్లు పేర్కొన్నారు. నియమనిష్టలతో యజ్ఞం నిర్వహించి తెలంగాణ వ్యాప్తంగా వర్షాలు కురిసేలా పూజలు నిర్వహించాలని ఆర్యసమాజ్ ప్రతినిధులను కోరారు. ఈ సందర్భంగా పంచ మహాయజ్ఞ పుస్తకాన్ని మంత్రి చేతుల మీదుగా ఆవిష్కరించారు. అంతకు ముందు మంత్రి ఆర్యసమాజ్ ఆవరణలో మొక్కలు నాటారు. మంత్రిని ఆర్యసమాజ్ ప్రతినిధులు ఘనంగా సన్మానించారు.

యజ్ఞంలో పాల్గొన్న మంత్రి పోచారం

ప్రజలు సుఖశాంతులతో ఉండాలి

ప్రజలందరూ సుఖశాంతులతో ఉండేలా ఆర్యసమాజ్ ప్రతినిధులు యజ్ఞ కార్యక్రమాలు నిర్వహించి కృషి చేయాలని తెలంగాణ ఆర్యసమాజ్ రాష్ట్ర అధ్యక్షులు విఠల్‌రావు ఆర్య అన్నారు. ఇంటింటా యజ్ఞ కార్యక్రమం విజయవంతం చేయాలన్నారు. యజ్ఞంతో వాతావరణం శుద్ధి అయి సకాలంలో వర్షాలు కురిసి పాడి పంటలు పండుతాయని పేర్కొన్నారు. కార్యక్రమంలో స్వామి బ్రహ్మానంద సరస్వతి, మాజీ ఎమ్మెల్సీ కత్తెర గంగాధర్, ఆర్యసమాజ్ అధ్యక్షులు గోజ రాజేందర్, ఉపాధ్యక్షులు శివప్రసాద్, కార్యదర్శి పడిగెల కృష్ణ, కత్తెర శ్రీనివాస్, నాయకులు ఎర్వాల కృష్ణారెడ్డి, గురువినయ్, వార్ల సురేష్, అంజిరెడ్డి, ఎజాజ్, గంగాధర్, గోపాల్‌రెడ్డి, బాబా తదితరులు పాల్గొన్నారు.

సంస్కృతి, సంప్రదాయాలకు ప్రతీక ఆర్యసమాజ్ : మంత్రి

బాన్సువాడ, నమస్తే తెలంగాణ : సంస్కృతి, సంప్రదాయాలు ఆర్య సమాజంలో కొల్లాగొన్నట్లు కనబడుతున్నాయని, రాష్ట్ర వ్యవసాయ శాఖ మంత్రి పోచారం శ్రీనివాస్‌రెడ్డి అన్నారు. గురువారం మండల కేంద్రంలోని ఆర్య సమాజ్ మందిరంలో మూడు రోజులుగా నిర్వహిస్తున్న శ్రావణీ వేద ప్రచార సప్తాహం ముగింపు కార్యక్రమంలో ఆయన పాల్గొని ప్రసంగించారు. 1940 ముందు ప్రారంభించిన ఆర్య సమాజం తన సిద్ధాంతాలను నేటికి కొనసాగిస్తున్నారని అన్నారు. యజ్ఞాలతో వర్షాలు కురుస్తాయనడానికి బాన్సువాడలో బుధవారం రాత్రి కురిసిన భారీ వర్షమే నిదర్శనమన్నారు. ఆర్య సమాజ్ చేసే కార్యక్రమాలకు ఆపదర్శి సహాయ సహకారాలు అందిస్తామన్నారు. అంతకు ముందు ఆయన ఆర్యసమాజ్ మందిర ఆవరణలో మొక్కలు నాటారు. పూర్ణాహుతి యజ్ఞంలో పాల్గొన్నారు. కార్యక్రమంలో ఆర్య క్షుడు రాజేందర్, కార్యదర్శి కృష్ణ, నాయకులు గురు నారాయణ తదితరులు పాల్గొన్నారు.

మాట్లాడుతున్న మంత్రి పోచారం శ్రీనివాస్‌రెడ్డి, ఆర్య సమాజ్ మందిరం ఆవరణలో మొక్కలు నాటుతున్న మంత్రి

ముగిసిన వేదప్రచార సప్తాహం...

ఈ నెల 8 నుంచి ప్రారంభమైన శ్రావణీ వేద ప్రచార సప్తాహం గురువారం ముగిసింది. కార్యక్రమంలో ధర్మప్రచారకులు, జిల్లాలోని ఆర్యసమాజ్ సభ్యులు యజ్ఞాలు, ఇంటింటా ప్రచారాలు నిర్వహించారు. కార్యక్రమంలో ముఖ్య అతిథులుగా శ్రీ స్వామీ బ్రహ్మానంద సరస్వతి, ఆర్య సమాజం రాష్ట్ర అధ్యక్షుడు విఠల్‌రావు ఆర్య తదితరులు పాల్గొన్నారు.

जंगमपल्ली, जिला निजामाबाद आर्य समाज ने श्रावणी पर महायज्ञ का आयोजन कर सभा अधिकारियों से पौधा लगवाया
महिलाओं ने श्रद्धा से महायज्ञ में आहुति दिया ।

महामंत्री हरिकिशजी वेदालंकार, उपप्रधान श्री लक्ष्मण सिंह जी ठाकुर, श्री रामचन्द्र कुमारजी उपमन्त्रि वह श्री मुरली ब्रह्मचारी जी व समाज के अधिकारि पौधा लगाता हुए ।

समाज ने इस अवसर पर लाईन्स क्लब की सहायता से वैद्य उपचार शिविर लगाया

ఆర్యసమాజ్ నారాయణపేట్ ఆధ్వర్యంలో నిర్వహించబడుచున్న దయానంద విద్యామందిర్ ఉన్నత పాఠశాల ఉపాధ్యాయిని సుశ్రీ నాగమ్మ గారికి జాతీయ ఉత్తమ ఉపాధ్యాయ అవార్డు లభించినది. 5వ సెప్టెంబరు 2015 నాడు ఢిల్లీలో రాష్ట్రపతి ప్రణబ్ ముఖర్జీ చేతులమీదుగా ఈ గౌరవాన్ని రూ॥ 50,000/- నగదుతో బాటు అందుకున్నారు

విద్యార్థుల్లో స్ఫూర్తినింపాలి

- పౌర విలువల పట్ల చైతన్యం కల్పించాలి
- సామాజిక దుర్నీతులను తొలగించే విద్యావిధానం అవసరం
- పరిస్థితులకు అనుగుణంగా బోధనాపద్ధతులు మారాలి
- గురుపూజోత్సవ వేడుకల్లో ఉపాధ్యాయులకు ప్రణబ్ పిలుపు
- 338 మంది ఉత్తమ ఉపాధ్యాయులకు జాతీయ అవార్డుల ప్రదానం

రాష్ట్రపతి ప్రణబ్ చేతుల మీదుగా ఉత్తమ ఉపాధ్యాయురాలిగా అవార్డు అందుకుంటున్న నారాయణపేట దయానంద విద్యామందిర్ ఉపాధ్యాయురాలు నాగమ్మ.

న్యూఢిల్లీ, సెప్టెంబర్ 5: త్యాగం, సహనం, కరుణ వంటి సామాజిక విలువలపై విద్యార్థుల్లో స్ఫూర్తి నింపాల్సిన అవసరం ఉన్నదని రాష్ట్రపతి ప్రణబ్‌ముఖర్జీ ఉపాధ్యాయులకు పిలుపునిచ్చారు. లింగ వివక్ష, కుల, సామాజిక దుర్నీతులను తొలగించే విద్యావిధానం కావాలని అన్నారు. గురుపూజోత్సవం సందర్భంగా శనివారం కేంద్ర మానవ వనరుల అభివృద్ధి మంత్రిత్వశాఖ ఆధ్వర్యంలో జరిగిన కార్యక్రమంలో 338 మంది ఉత్తమ ఉపాధ్యాయులకు జాతీయ అవార్డులు ప్రదానం చేశారు. ఒక్కొక్కరికి రజత పతకం, రూ. 50 వేల నగదు, సర్టిఫికెట్ అందజేశారు. ఈ సందర్భంగా ఆయన మాట్లాడుతూ తక్షశిల, నలంద, విక్రమశిల వంటి పురాతన విద్యాసంస్థల స్ఫూర్తితో ఉపాధ్యాయులు విద్యార్థుల ప్రతిభకు మెరుగులు దిద్దాలని సూచించారు. 'విలువలతోపాటు విద్యార్థుల్లో స్వీయ ప్రేరణతో ఫలితాలు సాధించగలిగిన వారే స్ఫూర్తిదాయక ఉపాధ్యాయుడికి సరైన నిర్వచనం' అని ప్రణబ్ చెప్పారు. కొత్త ఆలోచనలు, విలువలు, భావాలతో శరవేగంగా మారుతున్న ప్రపంచంలో విద్యాబోధనలో నాణ్యతకు ఎంతో ప్రాధాన్యం ఉన్నదన్నారు. ప్రపంచ పరిస్థితులను అర్థం చేసుకునే విధంగా యువతను తీర్చిదిద్దాల్సిన బాధ్యత కూడా గురువులదేనని ఆయన స్పష్టం చేశారు. విద్యాబోధనతోపాటు కొత్త అంశాలను నేర్చుకోవడంలో ఉపాధ్యాయులు సమర్థవంతమైన, సారూప్యతతో కూడిన విధానాలను రూపొందించుకోవాలని ప్రణబ్ ముఖర్జీ సూచించారు. అనునిత్యం సృజనాత్మక విధానంతో కూడిన పరిశోధనలు, ప్రయోగాలతో గురువులు తమ శక్తి సామర్థ్యాలు పునరుద్ధరించుకోవాలని హితవు చెప్పారు. బోధనా పద్ధతులను శరవేగంగా మార్చుకునేందుకు ఇన్ఫర్మేషన్, కమ్యూనికేషన్ టెక్నాలజీ (ఐసీటీ) మరో మార్గమని అన్నారు. 'దీర్ఘకాలిక లక్ష్యాల సాధనకు గురువుల నైపుణ్యాభివృద్ధికి సృజనాత్మక శిక్షణ నివ్వడం తప్పనిసరి. అందుకు అవసరమైన సంస్థాగత వసతులు కల్పించాలి' అని తెలిపారు. కార్యక్రమంలో కేంద్ర మానవవనరుల అభివృద్ధిశాఖ మంత్రి స్మృతి ఇరానీ, సహాయ మంత్రులు రాంశంకర్ కథారియా, ఉపేంద్ర కుష్వాహా పాల్గొన్నారు.

నిర్భయ ఘటనలను టీచర్లే ఆపగలరు: రాంశంకర్

దేశంలో నిర్భయలాంటి ఘటనలు జరుగకుండా పోలీసులు ఆపలేరని, అది కేవలం టీచర్లకే సాధ్యపడుతుందని కేంద్ర మానవ వనరుల అభివృద్ధిశాఖ సహాయ మంత్రి రాంశంకర్ కథారియా చెప్పారు.

सभा के नए प्रकाशन

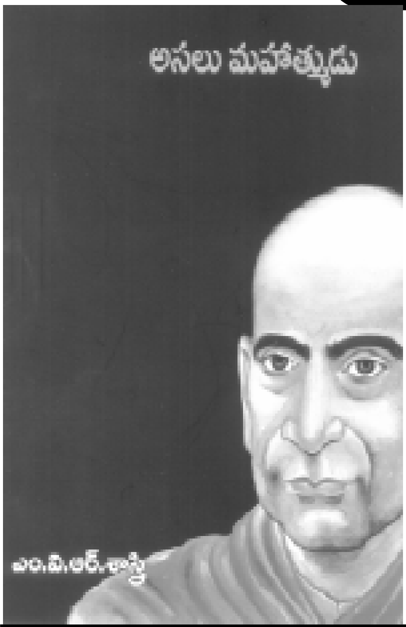

A book on Swami Shradhanand ji and political analysis of the then period Price Rs. 150/- per copy

Now it is available on concessional rate. only for Rs. 100/- per copy from Arya Pratinidhi Sabha Office, Sultan Bazar, Hyderabad

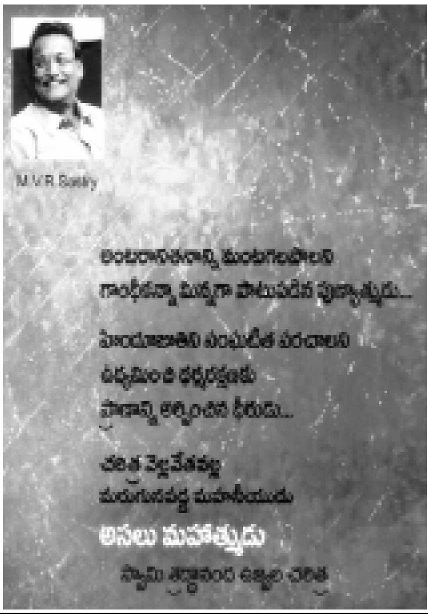

Date of Publication 2nd & 17th of every Month, Date of posting 3rd and 18th of every month

आर्य जीवन 18-09-2015 Registered-Reg. No. HD/783/2015-17 RNI.No.52990/93

ఆర్య జీవన్

హిందీ-తెలుగు ద్విభాషా పక్ష పత్రిక

ఆర్య ప్రతినిధి సభ ఆ.ప్ర.-తెలంగాణ, D.No. 4-2-15
మహర్షి దయానంద మార్గము సుల్తాన్ బజార్, హైదరాబాద్-95,
Arya Pratinidhi Sabha AP-Telangana, Sultan Bazar, Hyderabad -95
Phone No. 040-24753827, 66758707, Fax: 040-24557946
సంపాదకులు - విఠల్‌రావు ఆర్య ప్రధాన్ సభ

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित

चारों वेदों का सेट

आर्य प्रतिनिधि सभा में उपलब्ध नौ जिल्दों का सेट मात्र रु. २५००/- में लागत मूल्य से भी बहुत कम दाम पर

नौ जिल्द लगभग ८००० पन्नों का तुरन्त मंगवाएँ घर-घर बाँटे । हर आर्य समाज के पुस्कालय में एक सेट जरूर रखें ।

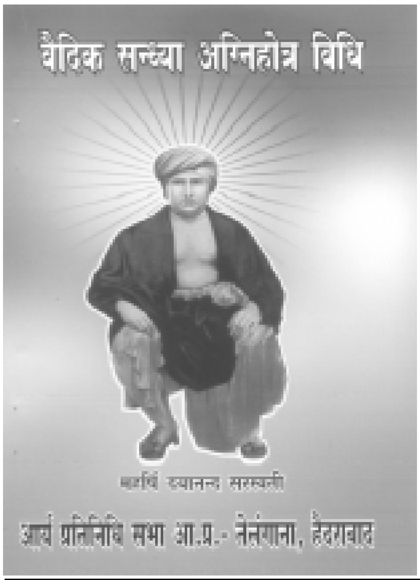

सभा के नए प्रकाशन

सन्ध्या अग्नि होत्र विधि पुस्तक का हिन्दी और तेलुगु में अलग-अलग डबल कलर में सभा ने प्रकाशित करवाया हैं। हिन्दी रू. 120/-में 10 प्रति और तेलुगु पुस्तक रू. 100/- में 10 प्रति सभा कार्यालय से प्राप्त की जा सकती । अधिक संख्या में मंगवाकर याज्ञिक प्रक्रिया को व्याप्त करने में अपनी भागीदारी निभाएं । आर्य प्रतिनिधि सभा, आ.प्र.-तेलंगाना, सुल्तान बाजार, हैदराबाद । सभा के अगले प्रकाशन : संस्कार विधि हिन्दी और तेलुगु में विवरण सहित तुरन्त प्रकाशत की जा रही है । लागत मूल्य पर पाठकोंके समक्ष उपस्थित की जाएगी । अभी से मंगवाने वालों के लिए मूल्य में 50 प्रतिशत छूट दी जाएगी ।

వైదిక పంచ మహాయజ్ఞ విధి (తెలుగులో) పునః ప్రచురణ రూ।। 100/- లకు 10 పుస్తకాలు. ఇదే విధముగా హిందీలో కూడ డబుల్ కలర్‌లో వైదిక సంధ్యా అగ్నిహోత్ర విధి పుస్తకమును ప్రచురించడం జరిగినది. వేల రూ।। 20/- కాని ఎక్కువ సంఖ్యలో తీసుకున్న వారికి రూ।। 12/- చొప్పున ఇవ్వబడును. అధిక సంఖ్యలో తెప్పించుకుని వేదప్రచారానికి తోడ్పడగలరు.

THE VIEWS & THE NEWS PUBLISHED IN THIS ISSUE MAY NOT NECESSARILY BE AGREEABLE TO THE EDITOR

Editor: VithalRao Arya acharyavithal@gmail.com

సంపాదకులు : విఠల్‌రావు ఆర్య, ప్రధాన్, ఆర్యప్రతినిధి సభ ఆ.ప్ర.-తెలంగాణ సుల్తాన్‌బజార్, హైదరాబాదు-95 Ph.No. 24753827,Email : acharyavithal@gmail.com
संपादकः श्री विट्ठल राव आर्य प्रधान सभा ने सभा की ओर से आकृति प्रेस चिक्कड़पल्ली में मुद्रित करवा कर प्रकाशित किया।
प्रकाशकः आर्य प्रतिनिधि सभा आं.प्र.-तेलंगाना सुल्तान बाज़ार, हैदराबाद तेलंगाना-९५